Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रतापकण्ठाभरणम्

~~176~~
11/26

1.3

हिन्दीभाषाटीकोपेतम् ।

श्री श्री माताजी के
चरणों में
—— स्वरूप
२४।१।60

क० प्रतापसिंहः

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्रीकविराजप्रतापसिंहरसायनाचार्यसंगृहीतम्

11/26

प्रतापकंठाभरणम् ।

आयुर्वेदाचार्यश्रीराजेश्वरदत्तमिश्रशास्त्रिकृत-

भाषाटीकोपेतम्

सम्वत् १९९३ वि०

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मुद्रक :—
पण्डित रामेश्वरप्रसाद पाण्डेय,
"सुरसरि" प्रेस, चूड़ीमोहाल-कानपुर।

प्रकाशक :—
कविराज प्रतापसिंह
रसायनाचार्य
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Aśhram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

समर्पण

11/26

पूज्यपाद
पिता जी के
पाद-पद्म-पराग की
लेशमात्र अनुकम्पासे इस
दुर्मेय, दुर्भेद्य संसार दुर्गम में
प्रवेश कर जीवन निर्वाह योग्य प्राचीन
नीत रीति का जो ज्ञान प्राप्त किया है
उसे सुमनवत् सञ्चय कर सुज्ञ पाठकों के लिये
प्रकाशित कर रहा हूँ । और वही सञ्चय श्रद्धाभक्तिपूर्वक
मानसिक कुसुमाञ्जलियों से आपके स्वर्गीय चरण-
कमलों में समर्पण कर केवल कृतज्ञता प्रकाशित
करने का साहस करता हूँ ।आशा है आप
अपने दिवङ्गत दयालु परमोदार आत्मा
से इस अकिञ्चन आत्मज की
इस पुस्तक को स्वीकार
कर अनन्त आशी-
र्वाद प्रदान
करेंगे ।

आपका चरणचंचरीक—

प्रताप ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रतापकण्ठाभरणम्

सङ्कलयिता—

कविराज प्रतापसिंह

रसायनाचार्य, प्राणाचार्य, भिषङ्मणि, प्राप्तस्वर्णपदक, रजिष्टर्ड वैद्य (गवर्नमेण्ट यू० पी०) सुपरिंटेंडेंट आयुर्वेदिक फार्मेसी, असिस्टेंट सुपरिंटेंडेंट सर सुन्दरलाल अस्पताल आयुर्वेद विभाग, प्रोफेसर आयुर्वेदिक कालेज, मेम्बर फेकल्टी आफ़ मेडिसिन ऐंड सर्जरी (आयुर्वेद) बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी। भूतपूर्व प्रिंसपल ललितहरि संस्कृत आयुर्वेदिक कालेज पीलीभीत और बाबा काली कमली वाले का आयुर्वेद-सेवासमिति कालेज हृषीकेश (देहरादून) सुपरिंटेंडेंट मंगलाप्रसाद सेनाटोरियम सारनाथ (बनारस) मेम्बर गवर्नमेन्ट बोर्ड आफ़ इन्डियन मेडिसिन यू० पी०, मेम्बर एडवाइजरी कमेटी गवर्नमेण्ट स्कूल आफ आयुर्वेद पटना (बिहार), सभापति निखिल भारतवर्षीय वैद्यसम्मेलन सन् १९३४ ई०, जनरल सेक्रेटरी नि० भा० व० आयुर्वेद-महामण्डल और विद्यापीठ, प्रेसीडेंट सेण्ट्रल आयुर्वेदिक रिसर्च-इन्स्टीट्यूट नडियाद (गुजरात) प्रसूति-परिचर्या, जच्चा, संक्षिप्त विषविज्ञान, आरोग्य-सूत्रावली, आयुर्वेदिक खनिजविज्ञान और आयुर्वेद-महामण्डल सचित्र रजत जयन्ती ग्रन्थ दो भाग के लेखक व सम्पादक आदि।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रतापकण्ठाभरणम्

टीकाकारः—

पं० राजेश्वरदत्त मिश्र शास्त्री

आयुर्वेदाचार्य (B. H. U.), विद्यावागीश, प्राप्तस्वर्णपदक
रजिस्टर्ड वैद्य (गवर्नमेण्ट यू० पी०) आयुर्वेदिक हाउस
फिजीशियन सर सुन्दरलाल अस्पताल, लेक्चरर
आयुर्वेदिक-कालेज, मेम्बर फेकल्टी आफ
मेडिसिन ऐंड सर्जरी (आयुर्वेद) बना-
रस हिन्दू युनिवर्सिटी। मेम्बर
गवर्नमेण्ट बोर्ड आफ इंडियन
मेडिसिन यू० पी०।
स्वस्थवृत्तसमुच्चय
के लेखक।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

❀ ॐ ❀

श्रीकविराजप्रतापसिंहरसायनाचार्यसंगृहीतम्

प्रतापकंठाभरणम् ।

आयुर्वेदाचार्यश्रीराजेश्वरदत्तमिश्रशास्त्रिकृतभाषाटीकोपेतम् ।

नित्यो नित्यानां चेतनश्चेतनानाम्
एको वहूनां यो विदधाति कामान् ।
साक्षी देवः सर्वभूतेषु गूढः
स नो वुद्धया शुभया संयुनक्तु ।। १ ।।

जो नित्यों का नित्य और चेतनों का चेतन है, जो एक ही सब के मनोरथों को पूर्ण करता है, जो देव सब का साक्षी और सब प्राणियों में व्याप्त है, वह हमें शुभ वुद्धि से युक्त करे।

वाञ्छा सज्जनसङ्गमे परगुणे प्रीतिर्गुरौ नम्रता
विद्यायां व्यसनं स्वयोषिति रतिर्लोकापवादाद्भयम् ।
भक्तिः शूलिनि शक्तिरात्मदमने संसर्गमुक्तिः खले
एते येषु वसन्ति निर्मलगुणास्तेभ्यो नरेभ्यो नमः ।।२।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सज्जनों की संगति में इच्छा, दूसरे के गुणों में प्रीति, गुरुजनों के प्रति नम्रता, विद्याभ्यास में तत्परता, अपनी ही पत्नी के साथ अनुराग, लोकापवाद से भय, शिव जी में भक्ति, अपने मन के वेगों के रोकने की शक्ति, और दुर्जनों के संसर्ग से निवृत्ति, ये निर्मल गुण जिनमें रहते हैं उन मनुष्यों को नमस्कार है। अर्थात् ऐसे नर पूजनीय और अनुकरणीय हैं।

भक्तिर्भवे मरणजन्मभयं हृदिस्थं
स्नेहो न वन्धुषु न मन्मथजा विकाराः।
संसर्गदोषरहिता विजना वनान्ताः
वैराग्यमस्ति किमतः परमर्थनीयम् ॥ ३ ॥

ईश्वर में भक्ति है, हृदय में जन्म और मरण का भय नहीं है, बान्धवों में स्नेह भी नहीं है और न मन में काम का ही विकार है, संसर्ग-दोष से रहित निर्जन वनस्थली सेवन करने को प्राप्त है। यदि ऐसा वैराग्य वर्तमान है तो इससे बढ़कर और क्या चाहिए ?

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा
सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः।
यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ
प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम् ॥ ४ ॥

विपत्ति के समय धैर्य, उन्नति के समय क्षमा, सभा के बीच चतुराई, युद्ध के अवसर पर बहादुरी, यश की प्राप्ति के लिये सदा

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इच्छा और वेद-शास्त्रादि के स्वाध्याय के करने में सदा लगा रहना (अर्थात् विद्या का व्यसन) इत्यादि शुभ गुण महात्मा पुरुषों के स्वभावतः होते हैं ।

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् ।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥ ५ ॥

नीतिज्ञ लोग चाहे निन्दा करें अथवा प्रशंसा करें, लक्ष्मी (धन) चाहे आये अथवा बिल्कुल चली जावे, मृत्यु चाहे आज ही हो जाय अथवा दूसरे युग में हो, पर धीर लोग न्याययुक्त मार्ग से कभी पैर नहीं हटाते हैं ।

यशोऽधिगन्तुं सुखलिप्सया वा
मनुष्यसंख्यामतिवर्तितुं वा ।
अनुत्सुकानामभियोगभाजां
समुत्सुकेवाङ्कमुपैति लक्ष्मीः ॥ ६ ॥

यश के लिये या सुख पाने की इच्छा से अथवा मनुष्यसंख्या को अतिक्रमण करदेने के लिये निस्पृहतापूर्वक तन्मय होकर काम करने वाले सज्जनों की गोद में लक्ष्मी समुत्सुकता के साथ स्वयं आकर बैठती है ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अभिमानधनस्य गत्वरै
रसुभिः स्थास्नु यशश्चिचीषतः ।
अचिरांशुविलासचञ्चला
ननु लक्ष्मीः फलमानुषङ्गिकम् ॥ ७ ॥

विनाशशील प्राणों को देकर के भी स्थायी यश को सञ्चित करने की इच्छा वाले स्वाभिमानी पुरुषों के लिये विद्युत् के समान चञ्चल लक्ष्मी आनुषङ्गिक फल है।

अधिगतपरमार्थान् पण्डितान् मावमँस्था-
स्तृणमिव लघु लक्ष्मीर्नैव तान् संरुणद्धि ।
अभिनवमदलीलामत्तगण्डस्थलानां
न भवति बिसतन्तुर्वारणं वारणानाम् ॥ ८ ॥

जिन विद्वानों का विद्या पर पूर्ण अधिकार है उनकी अवहेलना न करो। तिनका के समान लघु लक्ष्मी उन्हें अवरुद्ध नहीं कर सकती। नवीन मद के द्वारा जिनका गण्डस्थल मत्त है ऐसे हाथियों को कमल के नाल का तन्तु क्या रोक सकता है ?

यज्जीव्यते क्षणमपि प्रथितं मनुष्यै-
र्विज्ञानशौर्यविभवार्यगुणैः समेतम् ।
तन्नाम जीवितमिह प्रवदन्ति तज्ज्ञाः
काकोऽपि जीवति चिराय बलिं च भुंक्ते ॥ ९ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विज्ञान, शूरता, विभव और आर्य-गुणों से युक्त होकर प्रसिद्धि के साथ एक क्षण भर जीना भी विद्वानों की सम्मति में जीना है अन्यथा कौवा भी वलि (कौर) खाकर अपना पेट पालता हुआ बहुत दिनों तक जीता है। अर्थात् बिना पूर्वोक्त गुणों के केवल अपना उदर पोषण करते हुये; बहुत समय तक का जीना भी जीना नहीं कहा जा सकता, वह जीवन वस्तुतः व्यर्थ ही है।

जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यम्
मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति ।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं
सत्सङ्गतिः कथय किन्न करोति पुंसाम् ॥ १० ॥

जो बुद्धि की जड़ताको दूर करती है, सत्य बोलने के लिये तत्पर कराती है, सम्मान बढ़ाती है, पाप को दूर भगाती है, चित्त को प्रसन्न कराती है और चारों दिशाओं में कीर्ति फैलाती है, इस प्रकार की सज्जनों की सङ्गति कहो क्या क्या मनुष्यों का उपकार नहीं करती।

सन्तप्तायसि संस्थितस्य पयसो नामापि न ज्ञायते
मुक्ताकारतया तदेव नलिनीपत्रस्थितं राजते ।
स्वातौ सागरशुक्तिकुक्षिपतितं तज्जायते मौक्तिकम्
प्रायेणाधममध्यमोत्तमगुणाः सङ्गात्सतो जायते ॥ ११ ॥

सन्तप्त लौह के ऊपर पड़े हुए जिस जल का नाम निशान भी नहीं बचता (अर्थात् सब भस्म हो जाता है) वही कमल के

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पत्र के ऊपर पड़ा हुआ मोती के समान चमकता है और वही स्वाती नक्षत्र के लगने पर समुद्र की सीप के पेट में पड़ा हुआ मोती ही बन जाता है। इस प्रकार सङ्गति के अनुसार मनुष्य मनुष्य. प्रायः अधम, मध्यम और उत्तम गुण उत्पन्न होते हैं।

गुणिनि गुणज्ञो रमते
नागुणशीलस्य गुणिनि परितोषः ।
अलिरेति वनात् कमलं
नहि भेकस्त्वेकवासोऽपि ॥ १२ ॥

गुणी जन गुणियों की सङ्गति से प्रसन्न रहते हैं, किन्तु बिना गुण वालों को गुणियों से सन्तोष नहीं होता, देखो !! भ्रमर बन से उड़कर कमल पर वास करता है, परन्तु मेंढक सहवासी होता हुआ भी उससे सम्बन्ध नहीं रखता।

गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति
ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः ।
आस्वाद्यतोयाः प्रभवन्ति नद्यः
समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः ॥ १३ ॥

गुणज्ञों के पास गुण गुण ही होते हैं, किन्तु वे ही, निर्गुणियों के पास रहकर दोष हो जाते हैं। जैसे नदियाँ स्वभावतः मधुर जल-वाली होती हैं, किन्तु समुद्र के साथ मिलने से अपेय (खारी) जल वाली हो जाती हैं।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अनेकरत्नप्रभवस्य तस्य
हिमं न सौभाग्यविलोपि जातम् ।
एको हि दोषो गुणसन्निपाते
निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः ॥१४॥

अनेक रत्नों को पैदा करने वाले उस पर्वतराज हिमालय की शोभा को हिम नहीं नष्ट कर सका। क्योंकि गुणसमूह के बीच में एक दोष इस प्रकार छिप जाता है जैसे चन्द्रमा की शुभ्र किरणों के बीच में उसका कलङ्क (कालिमा)।

एको हि दोषो गुणसन्निपाते
निमज्जतीन्दोरिति यो बभाषे ।
नूनं न दृष्टं कविनाऽपि तेन
दारिद्र्यदोषो गुणराशिनाशी ॥ १५ ॥

'चन्द्रमा की किरणोंके मध्यमें उसके कलङ्कके समान एक दोषभी गुणसमूह के बीच छिप जाता है' इस बातको जिस कवि ने कहा है, वस्तुतः उसने यह कदापि नहीं सोचा कि एक ही दारिद्र्यदोष अनेक अच्छे गुणों को नष्ट कर देता है।

उत्थाय हृदि लीयन्ते दरिद्राणां मनोरथाः ।
बालवैधव्यदग्धानां कुलजानां कुचाविव ॥१६॥

दरिद्रों के मनोरथ हृदय में उठ उठकर इस प्रकार लीन होजाते

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हैं, जिस प्रकार कुलीन बाल-विधवावों के शोक-सन्तप्त उरःस्थल पर उत्पन्न हुये कुच ।

उत्साहसम्पन्नमदीर्घसूत्रं
क्रियाविधिज्ञं व्यसनेष्वसक्तम् ।
शूरं कृतज्ञं दृढसौहृदं च
लक्ष्मीः स्वयं याति निवासहेतोः ॥ १७ ॥

जो उत्साही है, दीर्घसूत्र (आलसी) नहीं है, कार्य करने की विधि को जानता है, किसी भी प्रकार के व्यसन (नशा) में आसक्त नहीं है, वहादुर है, किये हुये उपकार को मानता है और जिसकी मैत्री दृढ़ होती है, ऐसे सज्जन के पास रहने के लिये लक्ष्मी स्वयं ही उपस्थित होजाती है ।

अङ्गणवेदी वसुधा, कुल्या जलधिः, स्थली च पातालम् ।
वल्मीकश्च सुमेरुः, कृतप्रतिज्ञस्य वीरस्य ॥ १८ ॥

दृढ़ प्रतिज्ञा के साथ संलग्न होकर काम करने वाले वीर पुरुष के लिये पृथ्वी आँगन की वेदी के समान, समुद्र छोटी नाली (बरहा) के समान, गहरा पाताल स्थली (समतल भूमि) के समान और ऊँच सुमेरु पर्वत साधारण बाँबी के समान हो जाता है। अर्थात् उसके लिये बड़ी से बड़ी, कठिन से कठिन वस्तु भी प्राप्त करना सरल है। उद्यमी पुरुष को अवश्य सिद्धि मिलती है ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

को वीरस्य मनस्विनः स्वविषयः को वा विदेशः स्मृतः
यं देशं श्रयते तमेव कुरुते वाहुप्रतापार्जितम् ।
यद् दंष्ट्रानखलांगुलप्रहरणः सिंहो वनं गाहते
तस्मिन्नेव हतद्विपेन्द्ररुधिरैस्तृष्णां छिनत्यात्मनः ॥१९॥

मनस्वी (उद्योगी) वीर पुरुष के लिये कौनसा अपना देश है और कौनसा पराया ? वह जिस देश में जाता है उसी को अपने वाहुओं के प्रताप से अपना बना लेता है। जैसे दाँत नख और लांगूल (पूँछ) रूपी शस्त्र वाला सिंह जिस वन में घुसता है उसी में हाथियों को मार कर उनके रक्त से अपनी तृष्णा को बुझाता है ।

सुवर्णपुष्पितां पृथ्वीं विचिन्वन्ति नरास्त्रयः ।
शूराश्च कृतविद्याश्च ये च जानन्ति सेवितुम् ॥२०॥

स्वर्णमयी (धन से पूर्ण) पृथ्वी को तीन प्रकार के मनुष्य खोजते हैं—शूरवीर, विद्वान् और जिन्हें सेवा करने की विद्या आती है ।

गुणाः कुर्वन्ति दूतत्वं दूरेऽपि वसतां सताम् ।
केतकीगन्धमाघ्राय स्वयं गच्छन्ति षट्पदाः ॥२१॥

सज्जन लोग चाहे दूर भी रहें, पर उनके गुण उनकी ख्याति के लिये स्वयं दूतका कार्य करते हैं। केतकी (केवड़ा) पुष्प के गन्ध का

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सूँघकर भ्रमर स्वयम् उसके पास चले जाते हैं।

मौने मौनी, गुणिनि गुणवान्, पण्डिते पण्डितोऽसौ,
मूर्खे मूर्खो, युवतिषु युवा, वाग्मिषु प्रौढ़वाग्मी।
दीने दीनः, सुखिनि सुखवान्, भोगिनि प्राप्तभोगः,
धन्यः कोऽपि त्रिभुवनजयी यो हि धूर्ते च धूर्तः ॥२२॥

ऐसा कोई ही विरला पुरुष त्रिभुवन-विजयी और धन्य है जो कि मौनियों के बीच मौनी, गुणियों के बीच गुणी, पण्डितों के बीच पण्डित, मूर्खों के बीच मूर्ख, युवतियों के बीच युवा, श्रेष्ठ वक्ताओं के बीच श्रेष्ठ वक्ता, दीनों के बीच दीन, सुखियों के बीच सुखी, भोगियों के बीच भोगी और धूर्तों के बीच धूर्त होकर रहता है।

बहवो यत्र नेतारः सर्वे पण्डितमानिनः।
सर्वे महत्वमिच्छन्ति तद् वृन्दमवसीदति ॥२३॥

जहाँ पर बहुत से नेता हैं, सभी अपने को पण्डित मानने वाले अहङ्कारी हैं और सब अपनी बड़ाई चाहते हैं वह समाज नष्ट हो जाता है।

येषां न विद्या न तपो न दानं
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मृत्युलोके भुवि भारभूताः
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ॥२४॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जो न विद्वान् हैं, न तपस्वी हैं, न दानी हैं, न ज्ञानी हैं, न उत्तम शील वाले हैं, न गुणी हैं और न धर्मिष्ठ हैं, वे इस मृत्युलोक में पृथ्वी के भार होते हुये मनुष्यरूप वाले पशु होकर, रहते हैं।

यो नात्मने न च गुरौ न च वन्धुवर्गे,
दीने दयां न कुरुते न च भृत्यवर्गे।
किं तस्य जीवितफलेन मनुष्यलोके,
काकोऽपि जीवति चिराय वलिं च भुङ्क्ते॥२५॥

जो न अपने लिये, न गुरुजनों के लिये, न बान्धवों के लिये, न सेवकों के लिये और न दीनों के लिये दया-भाव रखता है, उसके जीने का संसार में क्या फल है? यों तो कौवा भी बलि खाकर बहुत दिनों तक जीता है।

आहारनिद्राभयमैथुनानि
समानि हि स्युः पशुभिर्नराणाम्।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषः
धर्म्मेण हीनाः पशुभिः समानाः॥२६॥

खाने, सोने, डरने और मैथुन के बारे में मनुष्य और पशु परस्पर समान हैं। केवल धर्म ही मनुष्यों में विशेष है। यदि वह भी न रहा तो फिर मनुष्य सर्वथा पशु के समान ही है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

एह्यागच्छ समास्य चासनमिदं कस्माच्चिराद् दृश्यसे
का वार्ता ह्यतिदुर्वलोऽसि कुशलं प्रीतोऽस्मि ते दर्शनात् ।
एवं नीचजनेऽपि युज्यति गृहं प्राप्ते सतां सर्वदा
धर्मोऽयं गृहमेधिनां निगदितः स्मार्तो लघुः स्वर्गदः ॥२७॥

आओ आओ, इस आसन पर बैठो, बहुत दिनों के बाद दिखाई पड़े क्या कारण है ? क्या बात है ? बहुत दुर्वल हो, कुशल तो है ? तुम्हारे देखने से मैं बहुत प्रसन्न हूँ इस प्रकार नीच जनों के भी घर आने पर उनसे सदा पूछना चाहिये । यह धर्म-शास्त्र से प्रतिपादित बहुत सरल स्वर्गप्रद धर्म गृहस्थों के लिये कहा गया है ।

किं तेन हेमगिरिणा रजताद्रिणा वा
यत्राश्रिताश्च तरवस्तरवस्त एव ।
मन्यामहे मलयमेव यदाश्रयेण
कङ्कोलनिम्बकुटजान्यपि चन्दनानि ॥२८॥

उस सोने अथवा चाँदी के पहाड़ से क्या फल ? जहाँ पर पैदा होने वाले बृक्ष यदि वैसेही बृक्ष रह गये । हमतो मलयाचल को ही विशिष्ट मानते हैं जिस पर पैदा होने वाले कंकोल नीम और कुटज (कोरैया) के बृक्ष भी चन्दन के समान सुगन्धित हो जाते हैं ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सौजन्यधन्यजनुषः पुरुषाः परेषां
दोषान् विहाय गुणमेव गवेषयन्ति ।
त्यक्त्वा भुजङ्गमविषं हि पटीरगर्भात्
सौगन्ध्यमेव पवनाः परिवाहयन्ति ॥२९॥

वे भले मानुस लोग धन्य हैं जो दूसरे के दोषों को छोड़कर गुणको ही खोजते रहते हैं। जैसे-मलयाचल के चन्दन-वृक्ष पर लिपटे हुये सर्पों के विष को न ग्रहण कर वायु चन्दन की सुगन्धि को ही लेकर वहन करती है।

अलिरयं नलिनीदलमध्यगः कमलिनीमकरन्दमदालसः ।
विधिवशात्परदेशमुपागतः कुटजपुष्परसं वहु मन्यते ॥३०॥

कमल-पुष्प के दल के वीच रहने वाला और उसके रसके मदसे मत्त यह भ्रमर भाग्यवश परदेश (कमल और तड़ाग रहित जङ्गल) में पहुँच कर कोरैया के फूलों के रस को ही वहुत समझ रहा है। अर्थात् कुसमय आपड़ने पर सुख सम्पत्ति-वाले पुरुष भी जो कुछ मिल जाता है उसी पर निर्वाह करते हुये सन्तुष्ट रहते हैं।

अम्भोजिनीवननिवासविलासमेव
हंसस्य हन्ति नितरां कुपितो विधाता ।
न त्वस्य दुग्धजलभेदविधौ प्रसिद्धां
वैदग्ध्यकीर्तिमपहर्तुमसौ समर्थः ॥३१॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ब्रह्मा जी भी यदि क्रुद्ध हो जायें तो हंस के कमलिनी–बन में रहने के आनन्द को ही नष्ट कर सकते हैं, न कि उसके दूध और पानी को पृथक् पृथक् कर देने वाली प्रसिद्ध यशस्विनी स्वाभाविक शक्ति को। अर्थात् स्वामी यदि सेवक पर क्रुद्ध हो जाय तो उसकी जीविका को ही नष्ट कर सकता है, न कि उसके सद्गुण को।

नीरक्षीरविवेके हंसालस्यं त्वमेव तनुषे चेत् ।
विश्वेऽस्मिन्नधुनान्यः कुलव्रत्तं पालयिष्यति कः ॥३२॥

हे हंस ! यदि तुम दूध और पानी के विवेक (पृथक्करण) में आलस्य करते हो तो अब इस संसार में परम्परागत कुलाचार का पालन कौन करेगा ?

अवश्यंभाविभावानां प्रतीकारो भवेद्यदि ।
तदा दुःखैर्न लिप्येरन् नलरामयुधिष्ठिराः ॥ ३३ ॥

यदि होनहार के दूर करने का उपाय होता तो राजा नल, राम और युधिष्ठिर दुःख न भोगते। अर्थात् होनहार होके ही रहता है।

बुभुक्षितः किन्न करोति पापं
क्षीणा जना निष्करुणा भवन्ति ।
"आख्याहि भद्रे ! प्रियदर्शनस्य
न गङ्गदत्तः पुनरेति कूपम्" ॥ ३४ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भूखा मनुष्य कौनसा पाप नहीं कर सकता है ? अर्थात् भूखे को कर्तव्याकर्तव्य का ज्ञान नहीं रहता। और क्षीण (दुर्बल कृश) जन निर्दयी हो जाते हैं। यह कथा हितोपदेश में वर्णित है।

कः कालः, कानि मित्राणि, को देशः, कौ व्ययागमौ।
कश्चाहं, का च मे शक्तिरिति चिन्त्यं मुहुर्मुहुः ॥ ३५ ॥

कौन समय है ? कौन कौन मित्र हैं ? कौनसा देश है ? क्या खर्च है ? क्या आमदनी है ? कौन मैं हूँ और कितनी मेरी शक्ति है ? इस प्रकार नित्य बार बार सोचना चाहिये।

दारेषु किञ्चित्स्वजनेषु किञ्चित्
गोप्यं वयस्येषु सुतेषु किञ्चित्।
युक्तं न वा युक्तमिदं विचिन्त्य।
वदेद् विपश्चिन्महतोऽनुरोधात् ॥ ३६ ॥

कोई बात स्त्री के प्रति गोपनीय होती है, कोई कुटुम्बियों के प्रति, कोई मित्रों के प्रति और कोई पुत्रों के प्रति गोप्य होती है। कौनसी बात कहने में ठीक है और कौनसी नहीं ठीक है, इस प्रकार सोच कर तब समझदार पुरुष को बड़े अनुरोध के साथ बोलना चाहिये।

भाग्यवन्तं प्रसूयेथाः माशूरान् मा च पण्डितान्।
शूराश्च कृतविद्याश्च वने सीदन्ति मामकाः ॥ ३७ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कुन्ती ने (गर्भिणी) द्रौपदी को उपदेश दिया था कि भाग्यवान् पुत्र को पैदा करो, न कि शूरवीर और विद्वान् को। मेरे पुत्र शूरवीर और विद्वान् होते हुये भी भाग्यवान् न होने से वन में भटकते हुये दुख भोग रहे हैं। कहनेका तात्पर्य यह है कि शूरवीर और विद्वान् से भाग्यवान् अच्छा होता है।

वनेऽपि दोषाः प्रभवन्ति रागिणां
गृहेऽपि पञ्चेन्द्रियनिग्रहस्तपः।
अकुत्सिते कर्मणि यः प्रवर्तते
निवृत्तरागस्य गृहं तपोवनम् ॥ ३८ ॥

वन में रहने पर भी रागासक्त पुरुषों के दोष पैदा हो जाते हैं। घर में रहते हुये भी पञ्चेन्द्रिय-निग्रह करना तप है। अनिन्दनीय कर्म करने वाले रागरहित पुरुष के लिये घर ही तपोवन है।

आवद्धकृत्रिमसटो विकरालवक्त्रः
प्राप्तो हठान्मृगपतेः पदवीं यदि श्वा।
मत्तेभकुम्भदलपाटनलम्पटस्य
नादं करिष्यति कथं हरिणाधिपस्य ॥३९॥

बनावटी अयाल (सिंह के गर्दन का वाल) और भयानक सिंह का मुख लगाकर यदि कुत्ता जवरदस्ती सिंह की पदवी को प्राप्त करले तो भी मतवाले हाथियों के मस्तक के उत्पाटन में लोलुप सिंह के नाद को कैसे कर सकेगा ? अर्थात् अयोग्य पुरुष आडम्बर-

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वश यदि किसी उच्च स्थान पर पहुँच भी जाय तो भी उस पद के महत्वपूर्ण कार्य का सम्पादन नहीं कर सकता ।

व्याकीर्णकेशरकरालमुखा मृगेन्द्राः
नागाश्च भूरिमदराजिविराजमानाः ।
मेधाविनश्च पुरुषाः समरेषु शूराः
स्त्रीसन्निधौ परमकापुरुषा भवन्ति ॥ ४० ॥

छिटकी हुई केशर (अयाल) और भयानक मुख वाले सिंह, अत्यन्त मतवाले गज और युद्धों में बहादुर, मेधाशक्ति-सम्पन्न पुरुष भी स्त्री के समीप अत्यन्त कायर हो जाते हैं ।

संसार ! तव निस्तारपदवी न दवीयसी ।
अन्तरा दुस्तरा न स्युर्यदि रे मदिरेक्षणाः ॥ ४१ ॥

ऐ संसार तेरे निस्तार का मार्ग कठिन न हो, यदि मद भरे लोचन वाली दुस्तर स्त्रियाँ बीच में विघ्न रूप न हों ।

गत्वा धनञ्जयं ब्रूहि भीमसेनं वृकोदरम् ।
यदर्थं क्षत्रिया सूते सैष कालोऽयमागतः ॥ ४२ ॥

महाभारत-युद्ध के आरम्भ में कुन्ती ने विदुर से कहा कि जाकर अर्जुन और वृकोदर भीम से कहो कि जिस लिये क्षत्रिय महिला पुत्र को पैदा करती है वह समय अब आगया । क्षत्रिया की सन्तान युद्ध के लिये ही है ।

२

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः
स पण्डितः स श्रुतवान् गुणज्ञः ।
स एव वक्ता स च दर्शनीयः
सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति ॥ ४३ ॥

जिसके पास धन है वही पुरुष कुलीन, पण्डित, वहुश्रुत, गुणज्ञ, वक्ता और दर्शनीय है। कहाँ तक कहा जाय सब गुण धन के ही आश्रय रहते हैं।

साहित्यसङ्गीतकलाविहीनः
साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः ।
तृणं न खादन्नपि जीवमानः
तद्भागधेयं परमं पशूनाम् ॥ ४४ ॥

साहित्य और संगीत-कला से रहित पुरुष बिना पूँछ और सींग के साक्षात् पशु ही है। वह बिना तृण खाये हुये जो जीता है सो पशुओं का परम सौभाग्य है।

क्वचिद्भूमौ शय्या क्वचिदपि च पर्यङ्कशयनम्
क्वचित्कन्थाधारी क्वचिदपि च दिव्याम्बरधरः ।
क्वचिच्छाकाहारी क्वचिदपि च शाल्योदनरुचिः
मनस्वी कार्यार्थी गणयति न दुःखं न च सुखम् ४५

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कभी जमीन पर लेटना, कभी पलँग पर सोना, कभी कन्था (कथरी) ओढ़ना, कभी बढ़िया वस्त्र पहिनना, कभी शाक ही खाकर रहना और कभी बारीक जड़हन चावल का भात खाना। इस प्रकार यथावसर निर्वाह कर कार्यसिद्ध करने वाले मनस्वी (उत्साही वीर) लोग दुख सुख कुछ नहीं गिनते। तात्पर्य यह कि मनस्वी लोग जिस प्रकार हो सके अपना कार्य सिद्ध करते हैं, क्या दुःख और क्या सुख है ? इसका ध्यान बिल्कुल नहीं करते।

उत्खातं निधिशङ्कया क्षितितलं ध्मातं न किञ्चित्फलम्
त्यक्त्वा जातिकुलाभिमानमुचिता सेवा कृता निष्फला।
भुक्तं मानविवर्जितं परगृहे साशङ्कया काकवत्
तृष्णे ? दुर्मति पापकर्मनिरते नाद्याऽपि सन्तुष्यसि ॥४६॥

धन (खजाना) पाजाने की इच्छा से पृथ्वी-तल को खोद डाला किन्तु कुछ फल न मिला। जाति और कुल के अभिमान का परित्याग कर उचित सेवा की वह भी निष्फल होगई। दूसरे के घर जाकर सशंक हो काक के समान मानरहित भोजन भी किया। तथापि ऐ दुर्मति पाप कर्म में लगी हुई तृष्णे ! तू अब भी नहीं सन्तुष्ट होती है ?

भ्रान्तं देशमनेकदुर्गविषमं ध्माता गिरेर्धातवो
निस्तीर्णः सरितां पतिर्न्नृपतयो यत्नेन सन्तोषिताः।
मन्त्राराधनतत्परेण मनसा नीताः श्मशाने निशाः
प्राप्तः काणवराटकोऽपि न मया तृष्णेऽधुना मुञ्च माम् ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अनेक दुर्गम नीचे ऊँचे देशों का परिभ्रमण किया, पर्वतों में उत्पन्न होने वाले धातुवों को फूँक डाला, समुद्र को भी पार कर डाला तथा बड़े यत्न के साथ राजाओं को सन्तुष्ट किया और मन्त्र के आराधन करने में मन लगाकर श्मशान में अनेकों रातें बिताईं। किन्तु इतने पर भी एक कानी कौड़ी भी न पाया। ऐ तृष्णे! अब तो मुझे छोड़ दे।

गुणिगणगणनारम्भे न पतति कठिनी ससम्भ्रमा यस्य।
तेनाम्बा यदि सुतिनी वद वन्ध्या कीदृशी भवति ॥४८॥

गुणियों की गणना करते समय आरम्भ में ही जिसके प्रति शीघ्रता के साथ उँगली नहीं उठती, उस पुत्र से यदि माता पुत्रवाली कहलाती है तो फिर वन्ध्या किसे कहें? अर्थात् अयोग्य पुत्र के पैदा करने से तो बाँझ रहना ही अच्छा है।

भिक्षाशनं तदपि नीरसमेकवारं
शय्या च भूः परिजनो निजदेहमात्रम्।
वस्त्रं च जीर्णशतखण्डमयी च कन्था
हा हा तथापि विषया न परित्यजन्ति ॥ ४९ ॥

भिक्षा का अन्न वह भी नीरस और दिन में एक बार, पृथ्वी ही शय्या, अपनी देह ही कुटुम्ब और फटी पुरानी कन्था (कथरी) ही पहिनने के लिये वस्त्र जिस मनुष्य के पास हैं, अफसोस!! तौ भी उसे विषय नहीं छोड़ते।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

क्षीरसारमपहृत्य शङ्कया स्वीकृतं यदि पलायनं त्वया ।
मानसे मम नितान्ततामसे नन्दनन्दन! कथं न लीयसे ॥५०

ऐ नन्दनन्दन कृष्ण ! यदि तुमने मक्खन चुराकर पकड़ जाने की शङ्का से भाग जाना ही स्वीकार कर लिया है तो मेरे अत्यन्त अन्धकारमय हृदयस्थल में आकर क्यों नहीं छिप जाते ? अर्थात् भक्त भगवान् से प्रार्थना करता है कि आप मेरे अज्ञानमय हृदय में निवास करें ।

रत्नाकरस्तव गृहं गृहिणी च पद्मा
किं देयमस्ति भवते जगदीश्वराय ।
लक्ष्म्या गृहीतमनसा मनसोऽस्ति दैन्यं
तन्मे गृहाण पदपङ्कजमर्पितं ते ॥५१॥

हे विष्णो ! आपका घर रत्नों की खानि क्षीरसागर है, आपकी पत्नी स्वयं लक्ष्मी ही है और आप स्वयं संसार भर के मालिक हैं, फिर आपके लिये कौन सी वस्तु देने योग्य है ? (अर्थात् कुछ भी नहीं, क्योंकि सब कुछ आपके पास वर्तमान है) आपके मनको लक्ष्मी जी ने हर लिया है अतः केवल मनका ही अभाव है इसलिये मेरे मन को ले लीजिये वह आपके चरण कमल को समर्पित है ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पात्रेषु शिष्यनिवहैर्विनियुज्यमाना
विद्या गुरुं हि गुणवत्तरमातनोति ।
आदाय शुक्तिषु वलाहकविप्रकीर्णै
रत्नाकरो भवति वारिभिरम्बुराशिः ॥५२॥

शिष्य लोगों के द्वारा योग्य मनुष्यों को दी गई हुई विद्या गुरु को अधिक गुणवान् बना देती है । मेघ के द्वारा सीप के अन्दर छोड़े हुये जल से समुद्र रत्नाकर हो जाता है। अर्थात् शिष्य-परम्पराद्वारा विद्या का प्रचार होने से आदि गुरु का गौरव वढ़ता ही जाता है ।

दरिद्रं पुरुषं दृष्ट्वा नार्यः कामातुरा अपि ।
स्प्रष्टुं नेच्छन्ति कुणपं यद्वच्च क्रिमिदूषितम् ॥५३॥

दरिद्र पुरुष को देखकर कामातुर स्त्रियाँ भी दुर्गन्धित, क्रिमि-दूषित वस्तु के समान उसे छूना तक नहीं चाहतीं । अर्थात् दरिद्रता महा पाप है क्योंकि सांसारिक विषय सुख धन से ही प्राप्त हो सकता है । किसी और ने भी सच ही कहा है "सर्वशून्या दरिद्रता" ।

यूयं वयं वयं यूयमित्यासीन्मतिरावयोः ।
किं जातमधुना येन यूयं यूयं वयं वयम् ॥५४॥

आप हम हैं और हम आप हैं, इस प्रकार की एकताबुद्धि हम दोनों की थी । अब क्या हो गया ? जिससे आप आपही रहे और

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हम हम ही रहे, ऐसा भेद भाव पैदा हो गया । तात्पर्य यह कि मनुष्य एकमत रखता हुआ भी स्वार्थवशात् क्षण भर में ही विपरीत हो जाता है ।

स दीक्षितो यः सकलं सदीक्षते
स पण्डितो यः करणैरखण्डितः ।
स तापसो यः परतापकर्षणः
स धार्मिको यः परमर्म न स्पृशेत् ।।५५।।

वही दीक्षित है जो सब के प्रति सुदृष्टि रखता है, वही पण्डित है जो जितेन्द्रिय है । वही तपस्वी है जो दूसरों के दुख को दूर करने में तत्पर रहता है और वही धार्मिक है जो दूसरों के दिल को नहीं दुखाता है ।

मतिरेव बलाद्गरीयसी यदभावे करिणामियं दशा ।
इति घोषयतीव डिण्डिमः करिणो हस्तिपकाहतः क्वणन् ।।

बुद्धि ही सबसे बढ़कर वस्तु है (न कि शरीर) जिसके बिना ही (बड़े शरीर वाले) हाथियों की यह दशा है कि उसे मनुष्य के अधिकार में रहना पड़ता है । इस बात को मानों हाथीवान् (महावत) नक्कारा पीट कर घोषित करता है ।

कुले कलङ्कः कवले कदन्नता सुतः कुबुद्धिर्भवने दरिद्रता ।
रुजः शरीरे कलहप्रिया प्रिया गृहागता दुर्गतयः षडेव हि ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कुल में कलङ्क, खाने के कौर में दूषित अन्न, कुबुद्धि पुत्र, घर में दरिद्रता, शरीर में रोग और झगड़ालू स्त्री, ये गृहस्थों के लिये ६ दुर्गतियाँ हैं।

यशस्करे कर्मणि मित्रसंग्रहे
प्रियासु नारीष्वधनेषु वन्धुषु ।
क्रतौ विवाहे व्यसने रिपुक्षये
धनव्ययस्त्वेषु न गण्यते बुधैः ॥५८॥

यश पैदा करने वाले काम में, मित्र-संग्रह करने में, प्रिय स्त्री के सम्बन्ध में, निर्धन वन्धु के लिये, यज्ञ में, विवाह में, दुख के समय और शत्रु के विनाश के लिये बुद्धिमान् लोग धन का व्यय करना कुछ नहीं गिनते। अर्थात् इन कामों के लिये पर्याप्त धन खर्च करना चाहिये।

कदर्थितस्यापि हि धैर्यवृत्ते-
र्न शक्यते धैर्यगुणः प्रमाष्टुर्म् ।
अधः कृतस्यापि यथा कृशानो-
र्नाधः शिखा याति कदाचिदेव ॥५९॥

धीर पुरुष को कष्ट दे करके भी उसके धैर्य गुण को हटा नहीं सकते। अग्नि की ज्वाला का मुख नीचे करने पर भी कभी उसकी लौ नीचे नहीं जाती।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आदौ न वा प्रणयिनां प्रणयो विधेयो
दत्तोऽथवा प्रतिदिनं परिपोषणीयः ।
उत्क्षेप्य यत् क्षिपति तत्प्रकरोति लज्जां
भूमौ स्थितस्य पतने भयमेव नास्ति ॥६०॥

पहिले तो प्रेम ही नहीं करना चाहिए, यदि प्रेम हो ही गया तो उसका प्रतिदिन पालन करना चाहिये। उन्नत होकर गिरना लज्जा की बात है। वस्तुतः पृथ्वी पर बैठने वाले को गिरने का भय ही नहीं रहता। तात्पर्य यह कि प्रेम करके छोड़ देने से न प्रेम करना ही अच्छा है।

उपायसन्दर्शनजां च सिद्धिमपायसन्दर्शनजामसिद्धिम् ।
मेधाविनो नीतिविदः प्रयुक्ताः पुरः स्फुरन्तीमिव दर्शयन्ति ॥

उपायों के प्रयोग से प्राप्त होने वाली सिद्धि और अपायों के प्रयोग से प्राप्त होने वाली असिद्धि को बुद्धिमान् नीतिज्ञ लोग मानों आगे फरकती हुई दिखलाते हैं।

गङ्गातरङ्गहिमशीकरशीतलानि
विद्याधराध्युषितचारुशिलातलानि ।
स्थानानि किं हिमवतः प्रलयं गतानि
सत्स्वाभिमानपरपिण्डरता मनुष्याः ॥६२॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

गङ्गा जी की लहरों की ठंडी बूँदों से शीतल, विद्याधरों (देव जाति विशेष अथवा विद्वान् ऋषि) से सेवित सुन्दर शिलातल ऐसे हिमालय के स्थान क्या नष्ट हो गये ? जो मनुष्य स्वाभिमानी होते हुये भी दूसरे के आश्रित होकर जीवन बिता रहे हैं।

निर्माय नूतनमुदाहरणानुरूपं
काव्यं मयात्र निहितं न परस्य किञ्चित् ।
किं सेव्यते सुमनसां मनसाऽपि गन्धः
कस्तूरिकाजननशक्तिभृता मृगेण ।।६३।।

नवीन उदाहरणस्वरूप बनाकर काव्य-रचना मैंने की है, इसमें दूसरे कवि का वचन कुछ भी नहीं है। कस्तूरी पैदा करने की शक्ति वाला मृग क्या फूलों के गन्ध को मनसे भी कभी सूँघता है ?

ये नाम केचन इह प्रथयन्त्यवज्ञां
जानन्तु ते किमपि तान् प्रति नैष यत्नः ।
उत्पत्स्यतेऽत्र मम कोऽपि समानधर्मा
कालो ह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी ।।६४।।

भवभूति (उत्तर राम चरित्र के लेखक) महाकवि अपने समय में अपनी कृतियों की अवहेलना देखकर दुखित हृदय से लिखते हैं कि—जो मेरी कृतियों की अवहेलना करते हैं, उनके प्रति मेरा निवेदन है कि मेरी काव्यरचना का प्रयत्न उनकी प्रसन्नता के लिये

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नहीं है। मेरा विश्वास समय की अनन्तता और पृथ्वी की विपुलता देखकर यह है कि भविष्य में मेरे समान कवि कोई पैदा होगा, वही मेरी कृतियों को समझेगा। तात्पर्य यह कि–विरोधियों के रहते हुये भी इस अगम संसार में उत्तम कृति को सम्मान करने वाले कभी न कभी अवश्य पैदा होते हैं। अतः किसी को घबड़ा कर अपने गुणों को विकसित करने से मुख न मोड़ना चाहिये।

इतरतापशतानि यथेच्छया
वितर तानि सहे चतुरानन !
अरसिकेषु रसस्य निवेदनम्
शिरसि मा लिख मा लिख मा लिख ॥६५॥

हे ब्रह्मा जी ! आप अपनी इच्छा के अनुसार अन्य चाहे सैकड़ों दुःखों को दें मैं सब सह सकता हूँ, परन्तु अरसिक जनों के प्रति रसमयी कविता का निवेदन करना मेरे भाग्य में कभी न लिखिये, न लिखिये। क्योंकि यह असह्य वेदना मैं नहीं सह सकता।

एको देवः केशवो वा शिवो वा
एकं मित्रं भूपतिर्वा यतिर्वा।
एको वासः पत्तने वा वने वा
एका नारी सुन्दरी वा दरी वा ॥६६॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

एक ही देवता की उपासना करनी चाहिये वह विष्णु भगवान् हों अथवा शिव। एक ही मित्र होना चाहिये वह राजा हो अथवा सन्यासी। एक ही जगह निवास करना चाहिये वह नगर हो अथवा बन। एक ही सहवासिनी (स्त्री) होनी चाहिये वह सुन्दरी हो अथवा दरी (गुफा)।

नोट—आदि की ४ बातें क्रमशः गृहस्थाश्रम के लिये और अन्त की ४ बातें क्रमशः सन्यासाश्रम के लिये हैं।

शिरः शार्वं स्वर्गात् पशुपतिशिरस्तः क्षितिधरं
महीध्रादुत्तुङ्गादवनिमवनेश्चापि जलधिम्।
अधो गङ्गा सेयं पदमुपनता स्तोकमथवा
विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः॥

स्वर्ग से च्युत होकर शिव जी के शिर पर, शिव जी के शिर से हिमालय पर्वत पर, हिमालय से पृथ्वी पर और फिर पृथ्वीतल से समुद्र पर गिरती हुई वही गंगा लघु पद को प्राप्त हुई। वस्तुतः विवेक-भ्रष्ट पुरुषों का पतन सैकड़ों प्रकार से होता है।

विद्या नाधिगता कलङ्करहिता वित्तं च नोपार्जितम्
शुश्रूषाऽपि समाहितेन मनसा पित्रोर्न सम्पादिता।
आलोलायतलोचना युवतयः स्वप्नेऽपि नालिङ्गिताः
कालोऽयं परपिण्डलोलुपतया काकैरिव प्रेरितः॥६८॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

न निष्कलङ्क विद्या प्राप्त की, न धन उपार्जित किया, न मन लगा कर माता पिता की सेवा ही की और न चञ्चल विशाल नेत्र वाली युवतियों का आलिङ्गन स्वप्न में भी किया, तो केवल दूसरों के कौरों के लोलुप होते हुये कौवों के समान ही समय बिताया।

यदा किञ्चिज्ज्ञोऽहं द्विप इव मदान्धः समभवम्
तदा सर्वज्ञोऽस्मीत्यभवदवलिप्तं मम मनः।
यदा किञ्चित् किञ्चिद्बुधजनसकाशादवगतं
तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यवगतः॥

जब मैं थोड़ा ही ज्ञानवाला था तब हाथी के समान मदान्ध हो गया था और अपने को सर्वज्ञ समझने का अभिमान मन में रखता था। परन्तु जब विद्वज्जनों के सत्सङ्ग से कुछ कुछ ज्ञान प्राप्त करने लगा तब अपने को मूर्ख समझा और तब ज्वर के समान मेरा अभिमान निकल गया।

न नटा न विटा न गायका न परद्रोहनिबद्धबुद्धयः।
नृपसद्मनि नाम के वयं कुचभारानमिता न योषितः॥७०

न नाचने वाले हैं, न तमाशा (चेटक) दिखाने वाले हैं, न गाने वाले हैं, न दूसरों के साथ बैर करने में बुद्धि लगाने वाले हैं और न स्तन के भार से झुकी हुई सुन्दरी स्त्री ही हैं। फिर राजा के घर में हमारी पहुँच कैसे हो? अर्थात् राजा लोग नटादिक (भाँड भँडुवों) की ही कदर करते हैं।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

त्वं राजा वयमप्युपासितगुरुप्रज्ञाभिमानोन्नताः
ख्यातस्त्वं विभवैर्यशांसि कवयो दिक्षु प्रतन्वन्ति नः ।
नेत्थं मानधनातिदूरमनयोरप्यावयोरन्तरम्
यद्यस्मासु पराङ् मुखोऽसि वयमप्येकान्ततो निस्पृहाः ॥

तुम राजा हो तो हम भी गुरु की उपासना किये हुये बुद्धि के अभिमान से उन्नत हैं। तुम ऐश्वर्य से प्रसिद्ध हो तो हमारे भी यश को चारों दिशाओं में कवि लोग गाते हैं। इस प्रकार हम दोनों के मान और धन में अत्यन्त अन्तर न होने पर भी यदि हमारी ओर पराङ्मुख (मुख फेरने वाले बात न मानने वाले) हों तो हम भी तुम्हारे प्रति बिल्कुल निस्पृह हैं। अर्थात् राजा यदि विद्वान् का सम्मान नहीं करता तो विद्वान् को भी अपने मान को रखते हुये उसकी परवाह न रखना चाहिये।

दिव्यं चूतरसं पीत्वा न गर्वं याति कोकिलः ।
पीत्वा कर्दमपानीयं भेको मकमकायते ॥७२॥

भव्य आम के रस को पीकर कोयल घमण्ड नहीं करती, पर कीचड़युक्त पानी को पीकर ही मेढक टर्र टर्र करने लगता है।

अगाधजलसञ्चारी न गर्वं याति रोहितः ।
अङ्गुष्ठोदकमात्रेण शफरी फर्फरायते ॥७३॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अगाध जल के भीतर रहने वाली रोहू मछली घमण्ड नहीं करती, पर अंगुष्ठमात्र जल में रहने वाली सेहरी बहुत फड़फड़ाया करती है।

फलमलमशनाय स्वादु पानाय तोयं
शयनमवनिपृष्ठे वल्कले वाससी च।
नवधनमधुपानभ्रान्तसर्वेन्द्रियाणा–
मविनयमनुमन्तुं नोत्सहे दुर्जनानाम् ॥७४॥

(जङ्गल में रहकर) भोजन के लिये फल, पीने के लिये स्वादु जल, शयन के लिये पृथ्वीतल और पहिनने के लिये वल्कल पर्याप्त समझता हूँ, परन्तु नये धन रूपी मद्य के पान करने से भ्रान्त हो रही हैं सब इन्द्रियाँ जिनकी ऐसे दुर्जनों के (वश में रह कर समग्र सुख प्राप्त करते हुये भी उनके) अविनय (ऐंठ) को सहन नहीं कर सकता।

सम्भाषयेत्स्त्रियं नैव पूर्वदृष्टां च न स्मरेत्।
कथां च वर्जयेत्तासां नो पश्येल्लिखितामपि ॥७५॥

स्त्रियों के साथ बातचीत न करे, पहिले की देखी हुई को स्मरण न करे, उनके सम्बन्ध में कोई चर्चा भी न करे और स्त्रियों के चित्र को भी न देखे। इस प्रकार संयम करने ही से पूर्ण रूप से ब्रह्मचर्य का पालन हो सकता है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विश्वामित्रपराशरप्रभृतयो वाताम्बुपर्णाशना-
स्तेऽपि स्त्रीमुखपङ्कजं सुललितं दृष्ट्वैव मोहं गताः ।
शाल्यन्नं सघृतं पयोदधियुतं ये भुञ्जते मानवाः
तेषामिन्द्रियनिग्रहो यदि भवेद् विन्ध्यस्तरेत् सागरम् ।।

वायु, जल और पत्तों के ऊपर जीवन व्यतीत करने वाले विश्वामित्र पराशर प्रभृति तपस्वी भी स्त्री के सुन्दर कमल-मुख को देखकर मुग्ध होगये। फिर घी दूध दही और चावल खाने वाले मनुष्य यदि जितेन्द्रिय हो जायें तो विन्ध्याचल समुद्र पर तैरकर पार क्यों न होजाय।

वलिभिर्मुखमाक्रान्तं पलितैरङ्कितं शिरः ।
गात्राणि शिथिलायन्ते तृष्णैका तरुणायते ।।७७।।

मुख पर झुर्रियाँ छागई हैं, शिर के बाल सब सफेद हो गये हैं और अङ्ग भी सब शिथिल हो गये हैं। अर्थात् सब प्रकार से वृद्धता आ गई है। पर अकेली तृष्णा जवान ही होती जा रही है।

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ताः
तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः ।
कालो न यातो वयमेव याताः
तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः ।।७८।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भोग (आराम के पदार्थ) नहीं भोगे गये वल्कि हम लोग ही भोगे गये, तप नहीं किया गया वल्कि हम ही तप्त हुये, काल नहीं बीता वल्कि हम ही बीते, तृष्णा नहीं जीर्ण हुई वल्कि हम लोग ही जीर्ण हो गये।

घृतलवणतैलतण्डुलशाकेन्धनचिन्तयाऽनुदिनम् ।
विपुलमतेरपि पुंसो नश्यति धीर्मन्दविभवत्वात् ॥७९॥

घी, नमक, तैल, चावल, शाक और इन्धन की प्रति दिन चिन्ता से प्रवल वुद्धिमान् पुरुष की भी वुद्धि दरिद्रता के कारण नष्ट हो जाती है।

दिनमपि रजनी सायम्प्रातः शिशिरवसन्तौ पुनरायातः ।
कालः क्रीडति गच्छत्यायुः तदपि न मुञ्चत्याशावायुः ॥

माया सगी न मन सगो, सगो न यह संसार ।
परशुराम या जीव को, सगो सो सिरजनहार ॥

दिन, रात, सायं, प्रातः, शिशिर और वसन्त बार बार आते रहते हैं। इस प्रकार काल सतत क्रीड़ा ही किया करता रहता है, आयु व्यतीत होती रहती है, तो भी आशा रूपी वायु पिण्ड नहीं छोड़ती।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आदित्यस्य गतागतैरहरहः संक्षीयते जीवितम् ।
व्यापारैर्बहुकार्यभारगुरुभिः कालो न विज्ञायते ॥
दृष्ट्वा जन्मजराविपत्तिमरणं त्रासश्च नोत्पद्यते ।
पीत्वा मोहमयीं प्रमादमदिरामुन्मत्तभूतं जगत् ॥

सूर्य के आने जाने (दिन रात) के क्रम से जीवन घटता ही जाता है, बहुत काम वाले बड़े बड़े व्यापारों में फँसे रहने से समय के बीतने का भी पता नहीं चलता, जीवन मरण बुढ़ापा और दुःखों को देखकर भी डर (चिन्ता) नहीं उत्पन्न होती, वस्तुतः मोह उत्पन्न करने वाली प्रमादरूपी मदिरा को पीकर संसार उन्मत्त बना रहता है ।

षड् दोषाः पुरुषेणेह हातव्या भूतिमिच्छता ।
निद्रा तन्द्रा भयं क्रोध आलस्यं दीर्घसूत्रता ॥८२॥

संसार में ऐश्वर्य चाहने वाले पुरुषों को निद्रा, तन्द्रा (झँपकी लगा रहना) भय, क्रोध, आलस्य और दीर्घसूत्रता (ढिल्लरपन) इन ६ दोषों को त्याग देना चाहिये ।

यच्चिन्तितं तदिह दूरतरं प्रयाति
यच्चेतसा न गणितं तदिहाभ्युपैति ।
प्रातर्भवामि वसुधाधिपचक्रवर्ती
सोऽहं व्रजामि विपिनं जटिलस्तपस्वी ॥८३॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जो कुछ सोचा जाता है वह बहुत दूर चला जाता है, जिसको मन में सोचा तक नहीं वह सामने आ पड़ता है। (भगवान् रामचन्द्र जी कहते हैं कि) जो मैं कल प्रातः चक्रवर्ती राजा होने वाला था सो आज जटा धारण कर तपस्वी के वेष में सब त्याग कर वन जा रहा हूँ।

प्राक् पादयोः पतति खादति पृष्ठमांसं
कर्णे कलं किमपि रौति शनैर्विचित्रम्।
छिद्रं निरूप्य सहसा प्रविशत्यशङ्कः
सर्वं खलस्य चरितं मशकः करोति ॥८४॥

पहिले दोनों पैरों पर गिरता है, फिर पीछे से मांस को खाता है, कान के पास लगकर धीरे धीरे विचित्र ढँग से कुछ मनमनाता है, किसी छिद्र को पाकर निःशङ्क होकर उस पर घुस (टूट) पड़ता है। इस प्रकार दुष्ट के समस्त आचरण को मच्छर करता है।

उचितमनुचितं वा कुर्वता कार्यमादौ
परिणतिरवधार्या यत्नतः पण्डितेन।
अतिरभसकृतानां कर्मणामाविपत्ते-
र्भवति हृदयदाही शल्यतुल्यो विपाकः ॥८५॥

विचारवान् पुरुष को आरम्भ में ही उचित अथवा अनुचित काम करते हुये बहुत खयाल करके परिणाम को सोचना चाहिये।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सहसा किये हुये कामों का परिणाम शल्य (कंटक) के समान हृदय को जलाने वाला दुःखद होता है ।

सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम् ।
वृणते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः ।।

बिना विचारे हुये सहसा किसी काम को न करना चाहिये। क्योंकि अविवेक परम आपत्तियों का कारण है । सोच विचार कर काम करने वाले के पास गुण पर ललचाई हुई सम्पत्तियाँ स्वयं पहुँच जाती हैं ।

नासमीक्ष्य परं स्थानं पूर्वमायतनं त्यजेत् ।
चलत्येकेन पादेन तिष्ठत्येकेन बुद्धिमान् ।।८७।।

जब तक दूसरे स्थान को भली भाँति जाँच न करले तब तक पहिले स्थान को कदापि न छोड़े, बुद्धिवान् पुरुष जब एक पैर को जमाता है तभी दूसरे पैर को आगे चलने के लिये उठाता है ।

एकस्य दुःखस्य न यावदन्तं
गच्छाम्यहं पारमिवार्णवस्य ।
तावद् द्वितीयं समुपस्थितं मे
छिद्रेष्वनर्था बहुलीभवन्ति ।।८८।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

समुद्र को पार करने के समान जब तक एक दुख के अन्त तक नहीं पहुँचता हूँ तब तक दूसरा दुख उपस्थित हो जाता है। वस्तुतः छिद्र हो जाने पर बार बार अनर्थ हुआ ही करते हैं।

न धर्मशास्त्रं पठतीति कारणं
न चापि वेदाध्ययनं दुरात्मनः।
स्वभाव एवात्र तथातिरिच्यते
यथा प्रकृत्या मधुरं गवां पयः॥ ८९॥

दुष्टों का धर्मशास्त्र व वेदों का पढ़ना उनकी प्रकृति को नहीं बदल सकता। क्यों कि स्वभाव सबको अतिक्रान्त कर के रहता है। जैसे गाय का दूध (चाहे कटु तिक्त भी खिलाया जाय) सदा स्वभावतः मधुर ही रहता है।

मृगा मृगैः सङ्गमनुव्रजन्ति
गावश्च गोभिः तुरगास्तुरङ्गैः।
मूर्खाश्च मूर्खैः सुधियः सुधीभिः
समानशीलव्यसनेषु सख्यम्॥ ९०॥

मृग मृगों के साथ, गायें गौवों के साथ, घोड़े घोड़ों के साथ, मूर्ख मूर्खों के साथ और विद्वान् विद्वानों के साथ अनुकूल होकर चलते हैं। क्योंकि समान शील और व्यसन होने ही पर मित्रता होती है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

रथस्यैकं चक्रं भुजगयमिताः सप्त तुरगाः
निरालम्बो मार्गश्चरणरहितः सारथिरपि ।
रविर्यात्येवान्तं प्रतिदिनमपारस्य नभसः
क्रियासिद्धिः सत्वे भवति महतां नोपकरणे ॥९१

रथ एक ही पहिया वाला है जिसके चलाने वाले सर्पों से बँधे हुये ७ घोड़े हैं, मार्ग निराधार है और रथ हाँकने वाला सारथि भी बिना पैर का है, तब भी सूर्य भगवान् अपार आकाश को नित्य ही पार किया करते हैं। वस्तुतः कार्य की सिद्धि बड़े लोगों के मानसिक बल पर निर्भर है न कि उपकरणों पर।

मत्तेभकुम्भदलने भुवि सन्ति शूराः
केचित्प्रचण्डमृगराजवधेऽपि दक्षाः ।
किन्तु ब्रवीमि बलिनां पुरतः प्रसह्य
कन्दर्पदर्पदलने विरला मनुष्याः ॥ ९२ ॥

संसार में मतवाले हाथियों के मस्तक (मद) को दलन करने में बहादुर बहुत से लोग हैं और प्रचण्ड सिंहों को वध करने में दक्ष लोग भी बहुत हैं, पर मैं बलियों के समक्ष बलात् कहता हूँ कि कामदेव के गर्व को चूर्ण करने में समर्थ विरले ही मनुष्य हैं।

भोजनाच्छादने दद्यादृतुकाले च सङ्गमम् ।
भूषणाद्यं च नारीणां न ताभिर्मन्त्रयेत् सुधीः ॥९३॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

स्त्रियों को भोजन वस्त्र भी देवे, ऋतुकाल में सहवास भी करे और भूषण इत्यादि भी देकर सन्तुष्ट रक्खे, पर उनके साथ बुद्धिमान् कभी सलाह न करे ।

क्षते प्रहारा निपतन्त्यभीक्ष्णं धनक्षये दीप्यति जाठराग्निः ।
आपत्सु वैराणि समुल्लसन्ति छिद्रेष्वनर्था वहुलीभवन्ति ।।

घाव लग जाने पर उस पर बार बार चोट लगती रहती है, धन घट जाने पर भूँख वढ़ जाती है, आपत्ति पड़ जाने पर सभी वैर प्रकट होने लगते हैं। वस्तुतः छिद्र होजाने पर बहुत अनर्थ होते रहते हैं।

माता यस्य गृहे नास्ति भार्या च प्रियवादिनी ।
अरण्यं तेन गन्तव्यं यथारण्यं तथा गृहम् ।।९५।।

जिसके घर में माता नहीं है और प्रिय बोलने वाली भार्या भी नहीं है, उस पुरुष को घर छोड़ कर जंगल चला जाना चाहिये क्योंकि उसके लिये जैसा जंगल वैसा घर, दोनों बराबर ही हैं।

यथा हि मलिनैर्वस्त्रैर्यत्र तत्रोपविश्यते ।
एवं चलितवित्तस्तु वित्तशेषं न रक्षति ।। ९६ ।।

जैसे मलिन वस्त्र पहिना हुआ पुरुष जहाँ तहाँ सब जगह बैठ जाता है कुछ विचार नहीं करता, उसी प्रकार जिसका धन नष्ट हो चुका है वह बचे हुये धन की भी रक्षा नहीं कर सकता।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सर्वनाशे समुत्पन्ने ह्यर्द्धं त्यजति पण्डितः ।
अर्द्धेन कुरुते कार्यं सर्वनाशो हि दुस्तरः ॥९७॥

सब नष्ट हो जाने का अवसर आ पड़ने पर यदि आधा त्याग देने से कार्य न बिगड़े तो बुद्धिमान् को चाहिये कि आधा त्याग दे और शेष आधे से अपना कार्य करे। क्योंकि सर्वनाश होजाने पर किसी कार्य का करना दुस्तर है।

शस्त्रैर्हता न हि हता रिपवो भवन्ति
प्रज्ञाहताश्च रिपवः सुहता भवन्ति ।
शास्त्रं निहन्ति पुरुषस्य शरीरमेकं
प्रज्ञा कुलं च विभवं च यशश्च हन्ति ॥ ९८ ॥

शास्त्र द्वारा मारे गये शत्रु वस्तुतः नहीं मरते वरन् बुद्धि द्वारा मारे हुये शत्रु पूर्णतया मर जाते हैं। क्यों कि शास्त्र केवल पुरुष के शरीर मात्र को मारता है, परन्तु बुद्धि तो शत्रु के कुल, ऐश्वर्य और यश को भी मार देती है ।

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः
प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः ।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः
प्रारभ्य चोत्तमजना न परित्यजन्ति ॥ ९९ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अधम श्रेणी के लोग किसी कार्य को विघ्न के भय से प्रारम्भ ही नहीं करते और मध्य श्रेणी के प्रारम्भ करके विघ्न आ पड़ने पर उसे त्याग देते हैं। परन्तु उत्तम श्रेणी के लोग तो बार बार विघ्न आने पर भी प्रारम्भ करके किसी कार्य को नहीं छोड़ते।

लुब्धस्य नश्यति यशः पिशुनस्य मैत्री
नष्टेन्द्रियस्य कुलमर्थपरस्य धर्मः।
विद्याफलं व्यसनिनः कृपणस्य सौख्यं
राज्यं प्रमत्तसचिवस्य नराधिपस्य ॥१००॥

लोभी पुरुष का यश, चुगुलखोर की मित्रता, नष्टेन्द्रिय का वंश, धन एकत्र करनेवाले का धर्म, नशेबाज की विद्या का फल, कंजूस का सुख, और प्रमादी मन्त्री वाले राजा का राज्य नष्ट हो जाता है।

सन्तापयन्ति कमपथ्यभुजं न रोगाः
दुर्मन्त्रिणं कमुपयन्ति न नीतिदोषाः।
कं श्रीर्न दर्पयति कं न निहन्ति मृत्युः
कं स्त्रीकृता न विषयाः परितापयन्ति ॥१०१॥

किस अपथ्य सेवी को रोग नहीं पकड़ते ? किस दुष्ट मन्त्री के पास नीति के दोष नहीं पहुँचते ? लक्ष्मी किसको नहीं अभिमानी बना देती ? मृत्यु किसको नहीं मारती ? और कामदेव किसे नहीं सताता ?

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कुलं च शीलं च सनाथता च
विद्या च वित्तं च वपुर्वयश्च ।
एतान् गुणान् सप्त विचिन्त्य देया
कन्या बुधैः शेषमचिन्तनीयम् ॥१०२॥

कुल, शील, सनाथता, विद्या, धन, शरीर (स्वास्थ्य) और अवस्था इन सात गुणों का विचार करके ही बुद्धिमान् लोगों को कन्यादान करना चाहिये । शेष बातें कुछ भी न सोचना चाहिये ।

भोज्यं भोजनशक्तिश्च रतिशक्तिर्वराङ्गना ।
विभवो दानशक्तिश्च नाल्पस्य तपसः फलम् ॥१०३॥

भोज्य पदार्थ और भोजन करके पचाने की शक्ति, सुन्दर रमणी और रमण करने की शक्ति, धन और दान करने की शक्ति का होना थोड़ी तपस्या का फल नहीं है। अनन्त पुण्य होने ही से इनकी प्राप्ति होती है ।

श्वेतं पदं शिरसि यत्तु शिरोरुहाणां
स्थानं परं परिभवस्य तदेव पुंसाम् ।
आरोपितास्थिशकलं परिहृत्य यान्ति
चाण्डालकूपमिव दूरतरं तरुण्यः ॥१०४॥

स्त्रियों के प्रति शिर के बालों का सफेद होना पुरुषों के निरादर का प्रधान कारण है। रक्खे हुये हैं हड्डियों के टुकड़े जिनपर ऐसे

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

चाण्डाल के कुयें के समान उन्हें दूर ही से त्याग कर चली जाती हैं ।

वरं मौनं कार्यं न च वचनमुक्तं यदनृतं
वरं शून्या शाला न च खलु वरो दुष्टवृषभः ।
वरं वेश्या पत्नी न पुनरविनीता कुलवधूः
वरं वासोऽरण्ये न पुनरविवेकाधिपपुरे ॥१०५॥

मौन रहना अच्छा पर झूठ बोलना नहीं अच्छा, सरिया (गोष्ठ) का खाली रहना अच्छा परन्तु दुष्ट बैल का रहना नहीं अच्छा, वेश्या को पत्नी बनाना अच्छा पर कर्कशा कुलाङ्गना नहीं अच्छी, जंगल में रहना अच्छा पर अविवेकी राजा के नगर में रहना नहीं अच्छा ।

रोगी चिरप्रवासी परान्नभोजी परावसथशायी ।
यज्जीवति तन्मरणं यन्मरणं सोऽस्य विश्रामः ॥१०६॥

सतत रोगी, चिरकाल परदेशवासी, दूसरे का अन्न खाने वाले और दूसरे के घर में निवास करने वाले का जीना मरने के समान है और मरना उसके लिये विश्राम है ।

रोगी घृणी त्वसन्तुष्टः क्रोधनो नित्यशङ्कितः ।
परभाग्योपजीवी च षडेते दुःखभागिनः ॥१०७॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

"रोगी, घृणा करने वाला, असन्तुष्ट, क्रोधी, नित्य शङ्कित रहने वाला और दूसरे के भाग्य पर जीने वाला" ये ६ दुःख भोगने वाले होते हैं ।

असज्जनः सज्जनसङ्गिसङ्गात्
करोति दुःसाध्यमपीह साध्यम् ।
पुष्पाश्रयाच्छम्भुशिरोऽधिरूढा
पिपीलिका चुम्बति चन्द्रबिम्बम् ॥१०८॥

असज्जन पुरुष भी सज्जनों के संग करने वालों के साथ से दुःसाध्य कार्य को भी साध्य कर दिखाता है। फूल के सहारे शिवजी के मस्तक पर चढ़ी हुई चिउँटी चन्द्र-मण्डल को चूमती है ।

न वेत्ति यो यस्य गुणप्रकर्षं
स तं सदा निन्दति नात्र चित्रम् ।
यथा किराती करिकुम्भजातां
मुक्तां परित्यज्य बिभर्ति गुञ्जाम् ॥ १०९ ॥

जो जिस के गुण की विशेषता को नहीं जानता वह उसकी सदा निन्दा करता ही है इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। जैसे कोल भिल्लनी गजमुक्ता को छोड़कर गुंजा ही धारण करती है ।

कवीश्वराणां वचसां विनोदैर्नन्दन्ति विद्यानिधयो न चान्ये
चन्द्रोपला एव करैर्हिमांशोर्मध्ये शिलानां सरसीभवन्ति॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कविराजों की कविता के आनन्द से विद्वान् लोग ही प्रसन्न होते हैं न कि मूर्ख । पत्थरों के बीच चन्द्रकान्त ही चन्द्रमा की किरणों से सरस (गीला) होता है ।

स्वयं महेशः श्वशुरो नगेशः सखा धनेशस्तनयो गणेशः ।
तथापि भिक्षाटनमेव शम्भोर्बलीयसी केवलमीश्वरेच्छा ॥

स्वयं महेश हैं और श्वशुर हिमाचल नगेश (पर्वतों के राजा) हैं, मन्त्री कुबेर धनेश (धन के मालिक) हैं, पुत्र गणेश (देवगणों के अधिपति) हैं तो भी शंकर जी को भिक्षा ही माँगना पड़ता है। ईश्वर की इच्छा बलवती है ।

लक्ष्मि ! क्षमस्व वचनीयमिदं दुरुक्तम्
अन्धीभवन्ति पुरुषास्त्वदुपासनेन ।
नो चेत्कथं कमलपत्रविशालनेत्रो
नारायणः स्वपिति पन्नगभोगतल्पे ॥११२॥

हे लक्ष्मि ! मेरे इस कटुवचन को क्षमा कीजिये कि पुरुष लोग तुम्हारी उपासना करने से अन्धे हो जाते है, नहीं तो कमल पत्र के समान विशाल हैं नेत्र जिनके ऐसे विष्णु भगवान् क्या सर्प (शेष) की बनी हुई शय्या पर सोते ?

गुणेषु यत्नः पुरुषेण कार्यो न किश्चिदप्राप्यतमं गुणानाम् ।
गुणप्रकर्षादुडुपेन शम्भोरलंघ्यमुल्लङ्घितमुत्तमाङ्गम् ॥११३॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पुरुष को गुणों की प्राप्ति के लिये सदा यत्न करते रहना चाहिये। गुणों के वीच कोई भी ऐसा गुण नहीं जो प्राप्त न हो सके। गुण की प्रकर्षता ही के कारण चन्द्रमा अलङ्घनीय शिवजी के शिर को लाँघ गया।

आपो विमुक्ताः क्वचिदाप एव
क्वचिन्न किञ्चिद्गरलं क्वचिच्च ।
यस्मिन् विमुक्ताः प्रभवन्ति मुक्ताः
पयोद ! तस्मिन् विमुखः कुतस्त्वम् ॥ ११४ ॥

ऐ मेघ ! तुम्हारा छोड़ा हुआ जल कहीं पर जल के ही रूप में रहता है, कहीं सूखकर कुछ भी नहीं रह जाता और कहीं विष भी बन जाता है। पर जिसमें पड़ने से मोती बन जाता है, उसके सम्बन्ध में तुम विमुख क्यों रहते हो ?

स्निग्धा कुलीना महती गृहिणी तापहारिणी ।
तरुच्छायेव मार्गस्था पुण्यैः कस्यापि लभ्यते ॥ ११५॥

सरस, कुलीन और दुख हर लेने वाली श्रेष्ठ पत्नी, मार्ग में स्थित पेड़ की छाया के समान, बहुत पुण्य से किसी को मिलती है।

मालतीस्तवकस्येव द्वे गती तु मनस्विनाम् ।
सर्वेषां मूर्ध्नि वा तिष्ठेद्विशीर्येच्च वनेऽथवा ॥११६॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मालती फूल के गुच्छे के समान दो हालत मनस्वियों की होती है (१) सबके मस्तक के ऊपर चढ़े (२) अथवा वन में ही गिरजाय।

एकाकी निस्पृहः शान्तः पाणिपात्रो दिगम्बरः।
कदा शम्भो ! भविष्यामि कर्मनिर्मूलनक्षमः ॥११७॥

हे शंकर ! अकेले, निस्पृह, शान्त, हाथ ही है पात्र जिसका, दिशा ही है वस्त्र जिसका, और कर्म–फल को विनाश करने में समर्थ कब मैं हूँगा ?

सभा वा न प्रवेष्टव्या वक्तव्यं वा समञ्जसम्।
अब्रुवन् विब्रुवन् वाऽपि नरो भवति किल्विषी ॥११८

चाहे सभा में न जाय, यदि जाय तो उचित ही बोले। कुछ न बोलने से या विवाद करने से मनुष्य को पाप लगता है।

एता हसन्ति च रुदन्ति च कार्यहेतोः
विश्वासयन्ति च परं न च विश्वसन्ति।
तस्मान्नरेण कुलशीलवता सदैव
नार्यः श्मशानघटिका इव वर्जनीयाः ॥११९॥

ये स्त्रियाँ कार्य के लिये हँसती हैं, रोती हैं, विश्वास दिलाती हैं पर दूसरे पर विश्वास नहीं करती हैं। इसलिये कुलीन और शीलवान् मनुष्य को चाहिये कि इन्हें श्मशान की घटी (हंडी) के समान सदा दूर ही रक्खे।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सम्मोहयन्ति मदयन्ति विडम्बयन्ति
निर्भर्त्सयन्ति रमयन्ति विषादयन्ति ।
एताः प्रविश्य सरलं हृदयं नराणां
किं वा नु वामनयना न समाचरन्ति ॥१२०॥

मोहित करती हैं, पागल बना देती हैं, विडम्बना करती हैं, भर्त्सना देती हैं, रमण करती हैं और विषाद पैदा कर देती हैं। ये सुन्दर नेत्र वाली स्त्रियाँ पुरुष के सरल हृदय पर अधिकार जमाकर क्या नहीं कर डालती हैं ?

नातिप्रसङ्गः प्रमदासु कार्यो
नेच्छेद्बलं स्त्रीषु विवर्द्धमानम् ।
अतिप्रसक्तैः पुरुषैर्यतस्ताः
क्रीडन्ति काकैरिव लूनपक्षैः ॥१२१॥

प्रमदाओं के साथ अधिक सहवास नहीं करना चाहिए। स्त्रियों के बल को अधिक नहीं बढ़ाना चाहिए। क्योंकि वे अधिक आसक्त हुये पुरुषों के साथ कटे हुये पङ्ख वाले कौवों के समान क्रीड़ा करती हैं।

पुत्रादपि प्रियतरं खलु तेन दानं
मन्ये पशोरपि विवेकविवर्जितस्य ।
दत्ते खले तु निखिलं खलु येन दुग्धं
नित्यं ददाति महिषी ससुतापि पश्य ॥१२२॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विवेकरहित पशु भी अन्य से पाये हुये दान को पुत्र से भी अधिक प्रिय समझता है, ऐसा मैं मानता हूँ, खल (खर) खिलाने वाले को बच्चे वाली भैंस भी सम्पूर्ण दूध को दे देती है। (फिर घूस खाने वाले मनुष्य के लिये क्या कहना ?)

ददाति प्रतिगृह्णाति गुह्यमाख्याति पृच्छति ।
भुंक्ते भोजयते चैव षड्विधं प्रीतिलक्षणम् ॥१२३॥

देना, लेना, गुप्त बात कहना, पूँछना, खाना और खिलाना ये ६ प्रीति के लक्षण हैं ।

तावत्प्रीतिर्भवेल्लोके यावद्दानं प्रदीयते ।
वत्सः क्षीरक्षयं दृष्ट्वा परित्यजति मातरम् ॥१२४॥

जब तक लोग दान देते हैं तभी तक उनसे प्रीति रहती है। बछड़ा दूध का अभाव देख कर माता को छोड़ देता है।

यस्यास्ति सर्वत्र गतिः स कस्मात्
स्वदेशरागेण हि याति दुःखम् ।
तातस्य कूपोऽयमिति ब्रुवाणाः
क्षारं जलं कापुरुषाः पिबन्ति ॥१२५॥

जिसकी चारों ओर गति है वह क्यों अपने देश में आसक्त होकर दुःख झेलता है ? मेरे पुरखों का कुवाँ है इस प्रकार कहने वाले कायर ही खारी जल पिया करते हैं।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सीमन्तिनी यस्य गृहेऽन्नपूर्णा
त्रिलोकरक्षां कुरुतेऽन्नदानैः ।
भिक्षाचरः सोऽपि कपालपाणि–
र्ललाटलेखो न पुनः प्रयाति ॥१२६॥

जिनके घर में गृहिणी अन्नपूर्णा है जो कि अन्न दान से तीनों लोकों की रक्षा करती है, वे शंकर जी भी हाथ में कपाल लेकर भिक्षा माँगते फिरते हैं। वस्तुतः भाग्य में लिखा हुआ नहीं मिटता।

स्थाणुः स्वयं मूलविहीन एव पुत्रो विशाखो रमणी त्वपर्णा।
परोपनीतैः कुसुमैरजस्रं फलत्यभीष्टं किमिदं विचित्रम् ॥

स्थाणु (शिव जी) स्वयं मूलविहीन (माता पिता रहित) हैं, उनके पुत्र विशाख (स्वामिकार्तिक) और उनकी पत्नी (पार्वती जी) अपर्णा हैं। वे शिव दूसरों के चढ़ाये हुये फूलों से अभीष्ट फल देते हैं। कैसी विचित्र बात है ?

पत्रं नैव यदा करीरविटपे दोषो वसन्तस्य किम्
नोलूकोऽप्यवलोकते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणम् ।
वर्षा नैव पतन्ति चातकमुखे मेघस्य किं दूषणम्
यत्पूर्वं विधिना ललाटलिखितं तन्मार्जितुं कः क्षमः ॥

करील वृक्ष में यदि पत्ते नहीं हैं तो वसन्त का क्या दोष ? उल्लू पक्षी यदि दिन में नहीं देख पाता तो सूर्य्य का क्या दोष ? वर्षा

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जल यदि पपीहा के मुख में नहीं पड़ता तो मेघ का क्या दोष ? विधाता ने जो पहिले ही भाग्य में लिख दिया है उसे कौन हटा सकता है ?

दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य ।
यो न ददाति न भुंक्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति ॥१२९॥

देना, भोगना और नष्ट हो जाना ये तीन दशायें धन की होती हैं । जो न देता है और न भोगता है, उसकी तीसरी दशा (विनाश) होती है ।

वलीयसा हीनवलो विरोधं
न भूतिकामो मनसाऽपि वाञ्छेत् ।
न वध्यतेऽत्यन्तवलो हि यस्माद्
व्यक्तं प्रणाशोऽस्ति पतङ्गवृत्तेः ॥१३०॥

दुर्बल पुरुष यदि ऐश्वर्य चाहता हो तो बलवान् के साथ मन से भी विरोध न करे । क्योंकि अत्यन्त वल वाले का तो कुछ बिगड़ता नहीं, परन्तु पतङ्गवृत्ति वाले का विनाश निःसन्देह ही हो जाता है । चींटी दीमक प्रभृति कीट जब मरने वाले होते हैं तब उनके पंख जम आते हैं और वे उड़ने लगते हैं, अन्त में वे अग्नि (दीपक) पर धावा करते हैं और नष्ट जल जाते हैं । इसी प्रकार दुर्बल अपने विनाश के लिये ही उछल कूद कर बलवान् के साथ विरोध करने लगता है और अन्त में विनष्ट हो जाता है ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सुहृद्भिराप्तैरसकृद्विचारितं
स्वयञ्च बुद्ध्या प्रविचारिताश्रयम् ।
करोति कार्यं खलु यः स बुद्धिमान्
स एव लक्ष्म्या यशसां च भाजनम् ॥१३१॥

सच्चे मित्रों के साथ बार बार विचार कर और स्वयम् भी अपनी बुद्धि से सोचकर जो कार्य करता है, वही बुद्धिमान् है और वही धन और यश का पात्र होता है ।

अदेशकालज्ञमनायतिक्षमं
यदप्रियं लाघवकारि चात्मनः ।
योऽत्राब्रवीत्कारणवर्जितं वचो
न तद्वचः स्याद्विषमेव तद्वचः ॥१३२॥

बिना देशकाल का विचार करके, भविष्य के लिये अक्षम, अप्रिय और अपना लाघव करने वाला कारणरहित जो वचन बोला जाता है, वह वचन नहीं है बल्कि विष है ।

बलोपपन्नोऽपि हि बुद्धिमान्नरः
परं नयेन्न स्वयमेव वैरिताम् ।
भिषङ्ममास्तीति विचिन्त्य भक्षये-
दकारणात् को हि विचक्षणो विषम् ॥१३३॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बल से युक्त बुद्धिमान् पुरुष भी स्वयं दूसरे को अपना वैरी न बनावे। मेरे वैद्य वर्तमान हैं ऐसा सोच कर कौन चतुर अकारण विष खा सकता है?

आपदर्थे धनं रक्षेद्दारान् रक्षेद्धनैरपि।
आत्मानं सततं रक्षेद्दारैरपि धनैरपि ॥१३४॥

आपत्ति के लिये धन की रक्षा करनी चाहिये, धन खर्च करके दारा (स्त्री प्रभृति परिवार) की रक्षा करनी चाहिये और अपनी रक्षा दारा और धन दोनों का ख्याल छोड़ करके भी निरन्तर करनी चाहिये।

स्पृशन्नपि गजो हन्ति जिघ्रन्नपि भुजङ्गमः।
हसन्नपि नृपो हन्ति मानयन्नपि दुर्जनः ॥१३५॥

छूते ही हाथी मार देता है, सूँघते ही सर्प काट लेता है, हँसता हुआ भी राजा नष्ट कर देता है और सम्मान करता हुआ भी दुष्ट घात कर बैठता है।

त्यजेदेकं कुलस्यार्थे ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत्।
ग्रामं जनपदस्यार्थे, आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत् ॥१३६॥

कुटुम्ब के हित के लिये एक को छोड़ देवे, ग्राम भर के हित के लिये कुटुम्ब की परवा न करे, देश के हित के लिये ग्राम को छोड़ देवे और अपने हित के लिये संसार भर को त्याग देवे।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

निर्विषेणाऽपि सर्पेण कर्तव्या महती फणा ।
विषं भवतु मा वाऽस्तु घटाटोपो भयङ्करः ॥१३७॥

विषरहित सर्प को भी बड़ा फण काढ़ना ही चाहिये । विष हो या न हो घटाटोप (आडम्बर) ही भयङ्कर हो जाता है ।

विद्यया वपुषा वाचा वस्त्रेण विभवेन च ।
वकारैः पञ्चभिर्युक्तो नरः प्राप्नोति गौरवम् ॥१३८॥

विद्या, वपु (शरीर), वाणी, वस्त्र और विभव इन ५ वकारों से युक्त पुरुष गौरव पाता है ।

स्त्रीणां शत्रोः कुमित्रस्य पण्यस्त्रीणां विशेषतः ।
यो भवेदेकभावेन न स जीवति मानवः ॥१३९॥

स्त्री, शत्रु, कुमित्र और विशेषतः वेश्या के साथ एक दिल होकर जो पुरुष रहता है वह अधिक नहीं जी सकता ।

अतीतलाभस्य सुरक्षणार्थं भविष्यलाभस्य च सङ्गमार्थम् ।
आपत्प्रपन्नस्य च मोक्षणार्थं यन्मन्त्रितोऽसौ परमो हि मंत्रः ॥

प्राप्त लाभ को सुरक्षित रखने के लिये, भविष्य लाभ की प्राप्ति के लिये और आई हुई आपत्ति से छुटकारा पाने के लिये जो सलाह ली जाती है वही उत्तम सलाह है ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सर्पाः पिबन्ति पवनं न च दुर्बलास्ते
शुष्कैस्तृणैर्वनगजा बलिनो भवन्ति ।
कन्दैः फलैर्मुनिवरा गमयन्ति कालं
सन्तोष एव पुरुषस्य परं निधानम् ॥१४१॥

सर्प वायु ही पीते हैं परन्तु दुर्बल नहीं रहते, जंगली हाथी शुष्क तृण खाकर के भी बली ही रहते हैं, मुनिवर लोग कन्द फल से ही जीवन बिताते हैं, वस्तुतः सन्तोष ही पुरुषों की बड़ी निधि है ।

गृहमध्यनिखातेन धनेन धनिनो यदि ।
भवामः किन्न तेनैव धनेन धनिनो वयम् ॥१४२॥

घर के बीच गाड़े हुये धन से यदि कोई धनी कहलाता है, तो उसी धन से हम क्यों न धनी कहे जायें ?

तात्पर्य यह कि पृथ्वी में गाड़ा हुआ धन यदि खर्च न किया जाय तो वह व्यर्थ है ।

अग्निहोत्रफला वेदा शीलवित्तफलं श्रुतम् ।
रतिपुत्रफला दारा दत्तभुक्तफलं धनम् ॥१४३॥

वेद पढ़ने का फल है अग्निहोत्र करना, शास्त्र पढ़ने का फल है शील और धन से सम्पन्न होना, स्त्री का फल है रमण और पुत्र देना और धन का फल है दान करना और भोगना ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सुसञ्चितैर्जीवनवत्सुरक्षितैर्निजेऽपि देहे न नियोजितैः क्वचित् ।
पुंसो यमान्तं व्रजतोऽपि निष्ठुरैरेतैर्धनैः पञ्चपदी न दीयते ॥

भली भाँति सञ्चित किया गया हुआ, प्राण के समान सुरक्षित रक्खा गया हुआ और अपने शरीर के लिये भी जिसका उपयोग कभी नहीं किया ऐसा निष्ठुर धन यमालय जाते समय पाँच पग भी साथ नहीं देता ।

आकारैरिङ्गितैर्गत्या चेष्टया भाषणेन च ।
नेत्रवक्त्रविकारेण लक्ष्यतेऽन्तर्गतं मनः ॥१४५॥

आकृति से, सङ्केत से, चाल से, चेष्टा से, बोलने से और नेत्र तथा मुख के हेरने फेरने और सिकोड़ने से मनकी बात जानी जाती है ।

यस्य न ज्ञायते वीर्यं न कुलं न विचेष्टितम् ।
न तेन सङ्गतिं कुर्यादित्युवाच वृहस्पतिः ॥१४६॥

जिसकी शक्ति, वंश और कार्य का पता न चलता हो, उसका साथ न करे, यह वृहस्पति की सम्मति है ।

आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण
लध्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात् ।
दिनस्य पूर्वार्द्धपरार्द्धभिन्ना
छायेव मैत्री खलसज्जनाम् ॥१४७॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आरम्भ में बड़ी, पर बाद में क्रमशः क्षीण होती हुई दिन के पूर्वार्द्ध की छाया के समान दुष्टों की मित्रता होती है। और आरम्भ में छोटी पर पीछे क्रमशः बढ़ती हुई, दिन के उत्तरार्द्ध की छाया के समान सज्जनों की मैत्री होती है।

अपि सम्पूर्णतायुक्तैः कर्तव्याः सुहृदो बुधैः ।
नदीशः परिपूर्णोऽपि चन्द्रोदयमपेक्षते ॥१४८॥

सब प्रकार से सम्पन्न रहते हुये भी बुद्धिमान् को चाहिये कि अनेक मित्र बनावे। समुद्र परिपूर्ण होता हुआ भी चन्द्रोदय को चाहता है।

तावद्भयेन भेतव्यं यावद्भयमनागतम् ।
आगतं तु भयं वीक्ष्य नरः कुर्याद्यथोचितम् ॥१४९॥

तब तक भय से डरना चाहिये जब तक कि वह न आया हुआ हो। आये हुये भय को देखकर निर्भयतापूर्वक यथोचित उपाय करे।

असम्भवं हेममृगस्य जन्म
तथापि रामो लुलुभे मृगाय ।
प्रायः समापन्नविपत्तिकाले
धियोऽपि पुंसां मलिनीभवन्ति ॥१५०॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सोने के मृग का होना असम्भव था तब भी रामचन्द्र उसके पाने के लिये ललचा पड़े। प्रायः विपत्तिकाल में बुद्धिमानों की बुद्धि भी मलिन हो जाती है।

छायासुप्तमृगः शकुन्तनिवहैर्विष्वग्विलुप्तच्छदः
कीटैरावृतकोटरः कपिकुलैः स्कन्धे कृतप्रश्रयः।
विश्रब्धं मधुपैर्निपीतकुसुमः श्लाघ्यः स एव द्रुमः
सर्वाङ्गैर्बहुसत्वसङ्गसुखदो भूभारभूतोऽपरः ॥१५१॥

जिसकी छाया में मृग सोये हुये हैं, पक्षियों के आश्रय लेने से जिसकी पत्तियाँ दिखाई नहीं पड़ती हैं, जिसके खोंढ़रों में कीट भरे हुये हैं, जिसकी शाखाओं पर बानर बस रहे हैं, और जिसके फूलों के रस को भौंरे निर्भीकता के साथ चूस रहे हैं, अर्थात् जो सब प्रकार से बहुत प्राणियों के संग से सुख देने वाला है वही वृक्ष प्रशंसनीय है। इन गुणों से रहित वृक्ष तो पृथ्वी का भार स्वरूप ही है।

मूर्खाणां पण्डिता द्वेष्या निर्धनानां महाधनाः।
व्रतिनः पापशीलानामसतीनां कुलस्त्रियः ॥१५२॥

मूर्ख लोग पण्डितों से, निर्धन लोग धनियों से, व्यभिचारी लोग ब्रह्मचारियों से और वेश्यायें कुलाङ्गनाओं से द्वेष करती हैं।

अत्यादरो भवेद्यत्र कार्यकारणवर्जितः।
तत्र शङ्का प्रकर्तव्या परिणामेऽसुखावहः ॥१५३॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बिना किसी कार्य कारण के जहाँ बड़ा आदर होता हो, वहाँ अवश्य सन्देह करना चाहिये, क्योंकि परिणाम में वह दुःखद होगा।

शास्त्रं सुचिन्तितमपि परिशीलनीयम्
आराधितोऽपि नृपतिः परिशङ्कनीयः।
अङ्के धृताऽपि युवतिः परिरक्षणीया
शास्त्रे नृपे च युवतौ च कुतो वशित्वम् ॥१५४॥

भली भाँति पढ़े हुये शास्त्र को भी बार बार पढ़ते रहना चाहिये। सतत सेवा द्वारा अनुकूल राजा के विषय में भी सशङ्क रहना चाहिये। गोद में बैठी हुई युवती की रक्षा के सम्बन्धमें भी असावधान न रहना चाहिये। शास्त्र, राजा और युवती स्त्री कहाँ वश में रह सकती है?

धर्मार्थं यततामपीह विपदो दैवाद्यदि स्युः क्वचि-
त्तत्तासामुपशान्तये सुमतिभिः कार्यो विशेषान्नयः।
लोके ख्यातिमुपागताऽत्र सकले लोकोक्तिरेषा यतो
दग्धानां किल वह्निना हितकरः सेकोऽपि तस्योद्भवः॥

धर्म के लिये प्रयत्न करते हुये भी यदि दैव योग से आपत्तियाँ कभी आपड़ें तो उनकी शान्ति के लिये बुद्धिमानों को विशेष करके नीति का आश्रय लेना चाहिये। समस्त संसार में यह लोकोक्ति प्रसिद्ध है कि आग से जले हुये को आग से सेंकना भी हितकर है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नित्यं हिताहारविहारसेवी समीक्ष्यकारी विषयेष्वसक्तः ।
दाता समः सत्यपरः क्षमावानाप्तोपसेवी च भवत्यरोगः ।।

नित्य हित आहार और विहार (स्नान शयन आदि) सेवन करने वाला, सोच विचार कर काम करने वाला, विषयों में न फँसने वाला, दानी, सब के साथ निष्पक्षपात होकर समान रूप से व्यवहार करने वाला, सत्यपरायण, क्षमावान् और आप्त (यथार्थ-वक्ता सब प्राणियों के हित चाहने वाले) पुरुषों की सेवा करने वाला नीरोग रहता है।

दद्यात्साधुर्यदि निजपदे दुर्जनानाम्प्रवेशं
तन्नाशाय प्रभवति ततो वाञ्छमानः स्वयं सः ।
तस्माद्देयो विपुलमतिभिर्नावकाशोऽधमानां
जारोऽपि स्याद् गृहपतिरिति श्रूयते वाक्यतोऽत्र ।।

सज्जन यदि अपने स्थान पर दुर्जन का प्रवेश होने दे तो वह उस स्थान को चाहता हुआ सज्जन के नाश के लिये उद्यत हो जाता है। अतः बुद्धिमान् को चाहिये कि वह कभी भी दुर्जनों को इसके लिये अवसर न दे। ऐसा सुनने में आता है कि जार भी कभी गृह (गृहणी) का मालिक बन बैठता है।

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी
दैवेन देयमिति कापुरुषा वदन्ति ।
दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या
यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः ।।१५८।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उद्योगी पुरुष रूपी सिंह को ही लक्ष्मी मिलती है। 'भाग्य में जो होगा मिलेगा' ऐसा कायर लोग कहते हैं। अतः केवल भाग्य ही का भरोसा छोड़ कर अपनी शक्ति के अनुसार उद्योग करना चाहिये। यदि यत्न करने पर भी कार्य न सिद्ध हो तो सोचना चाहिये कि यत्न में क्या त्रुटि रह गई है? और उसे फिर फिर करना चाहिये।

सुहृदि निरन्तरचित्ते गुणवति भृत्येऽनुवर्तिनि कलत्रे।
स्वामिनि शक्तिसमेते निवेद्य दुःखं सुखी भवति ॥१५९॥

सदा हृदय में रहने वाले मित्र, गुणवान् सेवक, अनुकूल पत्नी और शक्तिवान् स्वामी के प्रति दुःख निवेदन करके मनुष्य सुखी होता है।

त्याज्यं न धैर्यं विधुरेऽपि दैवे
धैर्यात्कदाचित् स्थितिमाप्नुयात्सः।
यथा समुद्रेऽपि च पोतभङ्गे
सांयान्त्रिको वाञ्छति तर्तुमेव ॥१६०॥

दैव के प्रतिकूल होने पर भी धैर्य न छोड़ना चाहिये, क्योंकि धैर्य का अवलम्बन करने से कभी सिद्धि प्राप्त कर सकता है। जैसे समुद्र में जहाज टूट जाने पर मल्लाह (या समुद्री व्यापारी) तैरना चाहता है।

यस्मिन् कुले यः पुरुषः प्रधानः स सर्वयत्नैः परिरक्षणीयः।
तस्मिन् विनष्टे कुलसारभूते न नाभिभङ्गे ह्यरका वहन्ति ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जिस कुल में जो पुरुष प्रधान है उसकी रक्षा सब प्रकार से कुटुम्व के अन्य लोगों को करना चाहिये। कुल के सारांश-स्वरूप उस पुरुष के नष्ट हो जाने से, नाभि (नाह) भंग हो जाने से अरक (आरा) के द्वारा गाड़ी के समान वह कुल नहीं चल सकता।

भावस्निग्धैरुपकृतमपि द्वेष्यतां याति लोके,
साक्षादन्यैरपकृतमपि प्रीतये चोपयाति।
दुर्ग्राह्यत्वान्नृपतिमनसां नैकभावाश्रयाणां
सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः॥

प्रेमभाव से किया हुआ उपकार भी संसार में द्वेष्यता को प्राप्त होजाता है और दूसरों से किया गया प्रत्यक्ष अपकार भी प्रीतियोग्य हो जाता है। अनेक भावों का आश्रय होने से राजाओं के मन के दुर्ग्राह्य (कठिनता से अनुकूल करने योग्य) होने के कारण सेवा वृत्ति बहुत कठिन है, उसे योगी लोग भी नहीं समझ सकते।

निमित्तमुद्दिश्य हि यः प्रकुप्यति
ध्रुवं स तस्यापगमे प्रशाम्यति।
अकारणद्वेषपरो हि यो भवे-
त्कथं नरस्तं परितोषयिष्यति॥१६३॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जो किसी निमित्त को पाकर क्रुद्ध होता है वह उसके दूर हो जाने पर निश्चय शान्त हो जाता है। पर जो विना कारण के ही द्वेष करता है, उसे कोई मनुष्य कैसे सन्तुष्ट रख सकता है ?

ते धन्यास्ते विवेकज्ञास्ते सभ्या इह भूतले ।
आगच्छन्ति गृहे येषां कार्यार्थं सुहृदो जनाः ॥१६४॥

इस संसार में वे ही धन्य हैं, वे ही ज्ञानी और वे ही सभ्य हैं, जिनके घर में कार्य के लिये मित्र लोग आते हैं ।

उक्तो भवति यः पूर्वं गुणवानिति संसदि ।
तस्य दोषो न वक्तव्यः प्रतिज्ञाभङ्गभीरुणा ॥१६५॥

सभा में जिसको पहिले गुणवान् कह दिया है, फिर उसका दोष प्रतिज्ञा-भङ्ग दोष का भय रखते हुये नहीं कहना चाहिये ।

भूमिर्मित्रं हिरण्यञ्च विग्रहस्य फलत्रयम् ।
नास्त्येकमपि यद्येषां न तं कुर्यात्कथञ्चन ॥१६६॥

विग्रह (युद्ध) करने में ३ फल प्राप्त होते हैं। (१) भूमि (२) मित्र (३) धन। यदि इनमें एक भी न मिल सके तो कभी भी युद्ध न करे।

यथा वीजांकुरः सूक्ष्मः प्रयत्नेनाभिरक्षितः ।
फलप्रदो भवेत्काले तद्वल्लोकः सुरक्षितः ॥१६७॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जैसे बीज का छोटा सा अंकुर प्रयत्न के साथ भली भाँति रक्षा किया गया हुआ समय पाकर (वृक्ष होकर) फल देने वाला हो जाता है, उसी प्रकार सुरक्षित मनुष्य भी फलप्रद होता है।

दुर्मन्त्रान्नृपतिर्विनश्यति यतिः सङ्गात्सुतो लालनात्
विप्रोऽनध्ययनात्कुलं कुतनयाच्छीलं खलोपासनात् ।
मैत्री चाप्रणयात्समृद्धिरनयात्स्नेहः प्रवासाश्रयात्
स्त्री गर्वादनवेक्षणादपि कृषिः त्यागात्प्रमादाद्धनम् ॥

अनुचित मन्त्रणा से राजा, काम क्रोधादि में आसक्त होने से संन्यासी, लाड़ प्यार करने से पुत्र, विद्या न पढ़ने से ब्राह्मण, कुपुत्र होने से कुल, दुष्ट-संसर्ग से शील, नम्रता न रखने से मित्रता, अनीति करने से ऐश्वर्य, परदेश में रहने से स्नेह, गर्व करने से स्त्री, न देख भाल करने से कृषि और प्रमाद के साथ खर्च करने से धन नष्ट हो जाता है ।

आदौ चित्ते ततः काये सतां सम्पद्यते जरा ।
असतां तु पुनः काये नैव चित्ते कदाचन ॥१६९॥

सज्जनों के पहिले मन में फिर बाद को शरीर में जरा (बुढ़ापा) व्याप्त होती है। परन्तु दुष्टों के तो शरीर में ही आती है, मन में तो कभी आती ही नहीं।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

काके शौचं द्यूतकारे च सत्यं
सर्पे क्षान्तिः स्त्रीषु कामोपशान्तिः ।
क्लीबे धैर्यं मद्यपे तत्वचिन्ता
भूपे सख्यं केन दृष्टं श्रुतं वा ॥१७०॥

कौवे में पवित्रता, जुवारी में सत्यवादिता, सर्प में क्षमा, स्त्रियों में कामदेव की शान्ति, कायर में धैर्य, शराबी में तत्व (असलियत, ब्रह्म) का विचार और राजा में मित्रता का होना किसने देखा या सुना है ?

कोऽर्थान् प्राप्य न गर्वितो विषयिणः कस्यापदोऽस्तं गताः
स्त्रीभिः कस्य न खण्डितं भुवि मनः को नाम राज्ञां प्रियः ।
कः कालस्य न गोचरान्तरगतः कोऽर्थी गतो गौरवं
को वा दुर्जनवागुरासु पतितः क्षेमेण यातः पुमान् ॥१७१

संसार में किसने धन पाकर नहीं घमंड किया ? किस विषयी की आपत्तियाँ समाप्त हुईं ? स्त्रियों के द्वारा किसका मन खण्डित न हुआ ? राजा का प्रिय कौन हुआ ? कौन काल का ग्रास न हुआ ? कौन सा स्वार्थी गौरव को प्राप्त हुआ ? और कौन सा पुरुष दुर्जन की बात में पड़कर कल्याण पाया ?

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आसन्नमेव नृपतिर्भजते मनुष्यं
विद्याविहीनमकुलीनमसंस्कृतं वा ।
प्रायेण भूमिपतयः प्रमदा लताश्च
यः पार्श्वतो वसति तं परिवेष्टयन्ति ॥१७२॥

चाहे मूर्ख हो, दूषित कुल में उत्पन्न हो और असभ्य क्यों न हो, पर जो सदा समीप रहता है उसी पुरुष को राजा मानता है । प्रायः करके राजा, युवतियाँ और लतायें अपने पास में रहने वाले ही पर लिपटती हैं ।

वरं वनं व्याघ्रगजेन्द्रसेवितं
द्रुमालयं पक्वफलाम्बु भोजनम् ।
तृणानि शय्या परिधानवल्कलम्
न वन्धुमध्ये धनहीनजीवनम् ॥१७३॥

व्याघ्र और बड़े बड़े गजों से सेवित भयंकर वन में पेड़ों के नीचे रहना, पके फल खाना, जल पीना, तृण पर सोना और वल्कल (पेड़ की छाल) पहिन कर रहना अच्छा है । पर बान्धवों के वीच निर्धन होकर रहना अच्छा नहीं ।

नरपतिहितकर्ता द्वेष्यतां याति लोके
जनपदहितकर्ता त्यज्यते पार्थिवेन्द्रैः ।
इति महति विरोधे वर्तमाने समाने
नृपतिजनपदानां दुर्लभः कार्यकर्ता ॥१७४॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

राजा का हित करने वाला लोगों का बैरी हो जाता है, देश का हित करने वाला राजा से परित्यक्त हो जाता है, अतः एक ही प्रकार की विरोधावस्था की उपस्थिति में राजा और देश दोनों का हित करने वाला पुरुष दुर्लभ ही है।

यस्य न विपदि विषादः सम्पदि हर्षो रणे न भीरुत्वम् ।
तं भुवनत्रयतिलकं जननी जनयति सुतं विरलम् ॥१७५॥

जिसे न विपत्ति में शोक, न सम्पत्ति में हर्ष और न युद्ध में भय है, उस तीनों लोक के तिलक स्वरूप विरले ही पुत्र को माता पैदा करती है।

क्षुत्क्षामोऽपि जराकृशोऽपि शिथिलः प्राप्तोऽपि चान्त्यां दशाम्
आपन्नोऽपि विपन्नदीधितिरपि प्राणेषु नश्यत्स्वपि ।
मत्तेभेन्द्रविभिन्नकुम्भकवलग्रासैकदत्तस्पृहः
किं जीर्णस्तृणमत्ति मानमहतामग्रेसरः केसरी ॥१७६॥

भूख के कारण दुर्बल हुआ भी, बुढ़ापा के कारण कृश हुआ भी, अन्तिम (मरण) अवस्था को प्राप्त हो रहा भी, शिथिल, आपत्ति-ग्रस्त और निस्तेज होकर भी, मतवाले हाथियों के मस्तक को फाड़ कर खाने में ही जिसकी रुचि है ऐसा मानियों में अग्रण सिंह, वृद्ध होता हुआ प्राणों का विनाश होते हुये भी क्या घास खा सकता है ?

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

गण्डस्थलेषु मदवारिषु वद्धराग—
मत्तभ्रमद्भ्रमरपादतलाहतोऽपि ।
कोपन्न गच्छति नितान्तवलोऽपि नागः
तुल्ये वले तु वलवान् परिकोपमेति ॥१७७॥

कपोल पर वहते हुये मद के बूंदों पर आसक्त, मतवाले घूमते हुये भ्रमर के पैर की ठोकर खाता हुआ महाबली भी हाथी उस पर क्रुद्ध नहीं होता है। वस्तुतः वलवान् समान बल वाले पर ही क्रोध किया करता है, न कि दुर्बल पर।

सत्याऽनृता च परुषा प्रियवादिनी च
हिंस्रा दयालुरपि चार्थपरा वदान्या ।
नित्यव्यया प्रचुररत्नधनागमा च
वाराङ्गनेव नृपनीतिरनेकरूपा ॥१७८॥

सच्ची, झूठी, कठोर, प्रिय बोलने वाली, हिसंक, दयालु, स्वार्थ वाली, दान करने वाली, नित्य व्यय करने वाली और बहुत रत्न धन कमाने वाली राजाओं की नीति वेश्या के समान अनेक रूप धारण करती है।

नन्वात्मानं वहु विगणयन्नात्मनैवावलम्बे
तत्कल्याणि ! त्वमपि नितरां मागमः कातरत्वम् ।
"कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा
नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण" ॥१७९॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(महाकवि कालिदासरचित मेघदूत काव्य में)—

प्रवासित यक्ष मेघ को दूत बनाकर अपनी प्रिया के प्रति सन्देश भेजता हुआ कह रहा है कि हे कल्याणि ! मैं अपने को वहुत मानता हुआ अपने ही सहारे रहता हूँ, अतः तुम भी कातर कदापि न होना ।

जिसको अत्यन्त सुख अथवा दुख सर्वदा लगा रहता है ? उसकी दशा गाड़ी के पहिये के समान नीचे ऊपर आती जाती रहती है ।

अन्तर्लीनभुजङ्गमं गृहमिव ज्वालाकुलं वा वनम्
ग्राहाकीर्णमिवाभिरामकमलच्छायासनाथं सरः ।
नानादुष्टजनैरसत्यवचनासक्तैरनार्यैर्वृतम्
दुःखेन प्रतिगम्यते प्रचकितैः राज्ञां गृहं वार्धिवत् ॥

भीतर छिपे हैं साँप जिसमें ऐसे घर के समान, दावाग्नि से व्याप्त बन के समान, मगर से भरे हुये सुन्दर कमलों से सुशोभित तालाब के समान, झूठ बोलने वाले असभ्य दुष्टों से परिपूर्ण, समुद्रवत् राजाओं के घर में चकित होकर बड़ी कठिनाई से जाया जाता है ।

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूज्यानां तु विमानता ।
त्रीणि तत्र प्रवर्तन्ते दुर्भिक्षं मरणं भयम् ॥१८१॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जहाँ अपूज्य लोग पूजे जाते हैं और पूज्य लोग अपमानित होते हैं, वहाँ तीन बातें पैदा हो जाती हैं– (१) दुर्भिक्ष (अकाल), (२) मरण (मारक रोग), (३) भय (शत्रुओं का आक्रमण आदि) ।

अवन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदं
भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः ।
अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना
न जातहार्देन न विद्विषादरः ॥१८२॥

सफल क्रोध वाले पुरुष की आपत्ति को दूर करने के लिये मनुष्य स्वयं ही अनुकूल हो जाते हैं। परन्तु क्रोधरहित पुरुष को न मित्र से ही आदर प्राप्त होता है और न शत्रु ही डरता है।

नो मत्सरान्न च मनागपि दर्पभावान्–
नो द्वेषमात्रपरिदूषणनैपुणाद्वा ।
त्वत्प्रार्थनाप्रणयभङ्गभियैव किन्तु
श्रीमन्मया स्वमतितः किल किञ्चिदुक्तम् ॥१८३॥

श्री मन्महोदय ! न ईर्ष्या से, न तनिक भी अहंकार से और न केवल द्वेष के कारण दूषित करने की चतुराई ही से किन्तु तुम्हारी प्रार्थना और प्रेम के भङ्ग हो जाने के भय से ही मैंने अपनी बुद्धि के अनुसार कुछ कहा है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

परिचरितव्याः सन्तो यद्यपि कथयन्ति नोपदेशं ते ।
यास्तेषां स्वैरकथास्ता एव भवन्ति सदुपदेशाः ॥१८४॥

सज्जनों की उपासना करनी चाहिये, चाहे वे उपदेश न भी करते हों। क्योंकि जो उनके निजी वार्तालाप हैं वही सदुपदेश हो जाते हैं।

एकस्य कर्म संवीक्ष्य करोत्यन्योऽपि गर्हितम् ।
गतानुगतिको लोको न लोकः पारमार्थिकः ॥१८५॥

एक के निन्दित काम को देख कर दूसरा भी करने लगता है। वस्तुतः लोग परम्परा का ही अनुकरण करते हैं न कि यथार्थता का।

असंशयं क्षत्रपरिग्रहक्षमा यदार्यमस्यामभिलाषि मे मनः ।
सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः ॥

राजा दुष्यन्त कण्व ऋषि के आश्रम में कुमारी शकुन्तला पर आसक्त होकर तर्क कर रहा है कि यह निःसन्देह क्षत्रिय के परिग्रहण के योग्य है। ब्राह्मण कन्या कदापि नहीं है। क्योंकि मेरा निर्दोष मन इसे चाह रहा है। वस्तुतः सन्देह वाली वस्तुवों के विषय में सज्जनों के मन की प्रवृत्ति ही प्रमाण है।

ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता शौर्यस्य वाक्संयमो
ज्ञानस्योपशमः श्रुतस्य विनयं वित्तस्य पात्रे व्ययः ।
अक्रोधस्तपसः क्षमा प्रभवितुर्धर्मस्य निर्व्याजता,
सर्वेषामपि सर्वकारणमिदं शीलं परं भूषणम् ॥१८७॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ऐश्वर्य का भूषण सज्जनता, शूरता का मित भाषण, ज्ञान का शान्ति, विद्वत्ता का विनय, धन का उचित व्यय, तप का अक्रोध, समर्थ का क्षमा और धर्म का भूषण निश्छलता है। यह तो सब का पृथक् पृथक् हुवा परन्तु सबसे बढ़कर भूषण शील है।

पात्रापात्रविशेषोऽस्ति धेनुपन्नगयोरिव ।
तृणादुत्पद्यते दुग्धं दुग्धादुत्पद्यते विषम् ॥१८८॥

गाय और सर्प के समान योग्यायोग्य स्थान को पाकर द्रव्य के गुणों में परिवर्तन होता है। जैसे तृण से गाय के अन्दर दूध पैदा होता है और दूध जैसी वस्तु से सर्प के अन्दर विष पैदा होता है।

पात्रे त्यागी गुणे रागी भोगी परिजनैः सह ।
भावबोद्धा रणे योद्धा प्रभुः पञ्चगुणो भवेत् ॥१८९॥

स्वामी में पाँच गुण होने चाहियें (१) योग्य को दान करना (२) गुण में अनुराग करना (३) कुटुम्ब के साथ भोगना (४) दूसरों के भावों को समझना और (५) रण में युद्ध करना।

दाक्षिण्यं स्वजने दया परिजने शाठ्यं सदा दुर्जने ।
प्रीतिः साधुजने नयो नृपजने विद्वज्जनेष्वार्जवम् ।
शौर्यं शत्रुजने क्षमा गुरुजने नारीजने धूर्तता
ये चैवं पुरुषाः कलासु कुशलाः तेष्वेव लोकस्थितिः ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अपने कुटुम्ब के प्रति अनुकूलता, आश्रित जनों पर दया, दुर्जनों के प्रति सदा शठता, सज्जनों के साथ प्रेम, राजा के साथ नीति, विद्वानों के साथ नम्रता, शत्रुओं के प्रति शूरता, गुरुजनों के प्रति क्षमा और स्त्रीजनों के साथ धूर्तता करनी चाहिये। इन कलाओं में जो पुरुष कुशल है, उन्हीं से लोक स्थित है।

निर्गुणेष्वपि सत्वेषु दयां कुर्वन्ति साधवः।
न हि संहरते ज्योत्स्नां चन्द्रश्चाण्डालवेश्मसु ॥१९१॥

गुण-हीन प्राणियों पर भी सज्जन लोग दया ही करते हैं। चन्द्रमा चाण्डालों के घर पर से चाँदनी को नहीं हटाता।

खलानां कण्टकानां च द्विविधैव प्रतिक्रिया।
उपानन्मुखभङ्गो वा दूरतो वा विसर्जनम् ॥१९२॥

दुष्टों और काँटों का प्रतीकार दो ही प्रकार से किया जा सकता है (१) जूता के प्रहार से मुख तोड़ देना अथवा (२) दूर से ही त्याग देना।

विद्वत्त्वं च नृपत्वं च नैव तुल्यं कदाचन।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥१९३॥

विद्वत्ता और नृपत्व दोनों समान कभी भी नहीं कहे जा सकते। राजा स्वदेश में ही सम्मान पाता है किन्तु विद्वान् सर्वत्र पूजा जाता है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

केयूरा न विभूषयन्ति सततं हारा न चन्द्रोज्वलाः
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालंकृता मूर्द्धजाः ।
वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम् ॥

केयूर (विजायठ), चन्द्रहार, स्नान, विलेपन (चन्दनादि), फूल और सुसज्जित बाल सदा विभूषित नहीं करते, केवल संस्कृत वाणी ही पुरुष को अलङ्कृत करती है। अन्य भूषण सब क्षीण हो जाते हैं। वस्तुतः वाग्भूषण ही भूषण है।

कायक्लेशेन महता पुरुषः प्राप्नुयात् फलम् ।
तत्फलं लभते नारी सुखेन पतिपूजया ॥ १९५॥

पुरुष अपने शरीर को बहुत कष्ट देकर जिस फल (परिणाम) को प्राप्त करता है, उसे स्त्री बड़ी सरलता के साथ ही पति की सेवा करके प्राप्त कर लेती है।

शत्रोरपि गुणा वाच्या दोषा वाच्या गुरोरपि ।
सर्वदा सर्वयत्नेन पुत्रे शिष्यवदाचरेत् ॥१९६॥

शत्रु के भी गुण का वर्णन करना चाहिये और गुरु के भी दोष को कहना चाहिये। पुत्र के साथ सदा सब प्रकार से शिष्य के समान ही आचरण करना चाहिये।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पुस्तकेषु च या विद्या परहस्तेषु यद्धनम् ।
उत्पन्नेषु च कार्येषु न सा विद्या न तद्धनम् ॥१९७॥

जो ज्ञान पुस्तक में ही लिखा रहे, उपस्थित (याद) न हो और जो धन दूसरे के हाथ चला गया हो अपने पास न हो, वह विद्या और वह धन कार्य आ पड़ने पर काम में नहीं आ सकता ।

संसारश्रान्तचित्तानां तिस्रो विश्रान्तिभूमयः ।
अपत्यं च कलत्रं च सतां सङ्गतिरेव च ॥१९८॥

सांसारिक झंझटों से थक गया है चित्त जिनका ऐसे पुरुषों के विश्राम के लिये तीन स्थान हैं (१) सन्तान (२) स्त्री और (३) सज्जनों का सङ्ग ।

उपायानां च सर्वेषामुपायः पण्यसंग्रहः ।
धनार्थं शस्यते ह्येकस्तदन्यः संशयात्मकः ॥१९९॥

धनोपार्जन के निमित्त समस्त उपायों के बीच पण्यसंग्रह (दूकानदारी) सर्वोत्तम उपाय है । केवल यही धन कमाने के लिये श्रेष्ठ है, इसके अतिरिक्त अन्य उपाय सब सन्देहास्पद हैं ।

कृता भिक्षानेकैर्वितरति नृपो नोचितमहो
कृषिः क्लिष्टा विद्या गुरुविनयवृत्त्यातिविषमा ।
कुसीदाद्दारिद्र्यं परकरगतग्रन्थिशमना–
न्न मन्ये वाणिज्यात्किमपि परमं वर्तनमिह ॥२००॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अनेकों ने भिक्षा माँगना आरम्भ कर दिया, आश्चर्य है कि राजा उचित देता नहीं, खेती करना बहुत क्लिष्ट है, विद्या पढ़ना भी सदैव गुरु के साथ विनय पूर्वक रहने के कारण बहुत कठिन है और दूसरों के हाथ में दी हुई थैली (रकम) के नष्ट हो जाने से व्याज पर रुपया देने में भी दरिद्रता आ जाती है। अतः व्यापार से बढ़कर कोई जीविका नहीं है।

परीक्षका यत्र न सन्ति देशे नार्घन्ति रत्नानि समुद्रजानि ।
आभीरदेशे किल चन्द्रकान्तं त्रिभिर्वराटैर्विपणन्ति गोपाः ।।

जिस देश में परीक्षक (रतन पारखी) नहीं होते वहाँ समुद्र में उत्पन्न होने वाले रत्नों का मूल्य नहीं लगता। अहीरों के देश में चन्द्रकान्त मणि को तीन कौड़ी ही में गोप लोग बेचते हैं।

कौशेयं कृमिजं सुवर्णमुपलाद् दूर्वाऽपि गोरोमतः
पङ्कात्तामरसं शशाङ्क उदधे रिन्दीवरं गोमयात् ।
काष्ठादग्निरहेः फणादपि मणिर्गोपित्ततो रोचना
प्राकाश्यं स्वगुणोदयेन गुणिनो गच्छन्ति किं जन्मना।।

रेशम कीड़ों से, स्वर्ण पत्थर (खानि) से, दूब मिट्टी से, कमल कीचड़ से, चन्द्रमा समुद्र से, नील कमल गोबर युक्त कीचड़ से, अग्नि काष्ठ से, मणि सर्प के फण से और गोरोचना गाय के पित्त से पैदा होता है। वस्तुतः गुणी जन अपने गुण के उदय होने ही से विख्यात होते हैं न कि पैदाइश से।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णा–
त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः ।
परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः ॥

मन, बचन, और शरीर में पुण्यामृत से परिपूर्ण (अर्थात् हर प्रकार से पुण्य करने वाले) उपकारों से तीनों लोकों को तृप्त करने वाले और दूसरों के अणुमात्र गुण को पर्वत के बराबर मान कर अपने हृदय में प्रफुल्लित होने वाले सज्जन कितने हैं? अर्थात् इन गुणों से सम्पन्न सज्जन संसार में इने गिने ही हैं।

आयुः कर्म च वित्तं च विद्या निधनमेव च ।
पञ्चैतानीह सृज्यन्ते गर्भस्थस्यैव देहिनः ॥२०४॥

आयु, कर्म, धन, विद्या और मृत्यु ये पाँच जीवात्मा के इस संसार में गर्भस्थ होते ही उसके लिये बना दिये जाते हैं।

हर्तुर्याति न गोचरं किमपि शं पुष्णाति यत्सर्वदा
ह्यर्थिभ्यः प्रतिपाद्य मानमनिशं प्राप्नोति वृद्धिं पराम् ।
कल्पान्तेष्वपि न प्रयाति निधनं विद्याख्यमन्तर्धनम्
येषां ते प्रतिमानमुज्झति नृपाः कस्तैः सह स्पर्द्धते ॥

विद्या नामक अन्तर्धन किसी से छीना नहीं जा सकता, जो कि सर्वदा कल्याण ही करता है, अर्थी को देने से सदा सम्मान मिलता

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

और वह धन बढ़ता ही जाता है, कल्पान्त होने पर भी नष्ट नहीं होता, जिनके पास विद्याधन है उनका सम्मान राजा करता है, फिर विद्वानों से कौन स्पर्धा कर सकता है ?

तपःसीमा मुक्तिः सकलगुणसीमा वितरणं
कलासीमा काव्यं जननसुखसीमा सुवदना ।
भियः सीमा मृत्युः सुकृतकुलसीमाश्रितभृतिः
क्षुधासीमान्नान्ता श्रुतिमुखरसीमा हरिकथा ॥

तप करने की सीमा (हद) मुक्ति पाना है, समस्त गुणों की सीमा उसका फैलाना है, कला कौशल की सीमा काव्यरचना है, जननेन्द्रिय सुख की सीमा सुमुखी रमणी का पाना है, भय की सीमा मृत्यु है। श्रेष्ठ कुल की सीमा आश्रितोपाश्रितों का भरण-पोषण है, क्षुधा की सीमा भोजन-प्राप्ति है और वेदशास्त्राध्ययन की सीमा हरिकथा कहना है।

माने म्लायिनि खण्डिते च वसुनि व्यर्थे प्रयातेऽर्थिनि
क्षीणे वन्धुजने मृते परिजने नष्टे शनैर्यौवने ।
युक्तं केवलमेतदेव सुधियां यज्जन्हुकन्यापयः–
पूतग्रावगिरीन्द्रकन्दरदरीकुञ्जे निवासः क्वचित् ॥

प्रतिष्ठा घट जाने पर, धन नष्ट हो जाने पर, प्रार्थी के निराश होकर लौट जाने पर, वान्धवों के क्षीण हो जाने पर, कुटुम्ब के

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विनष्ट हो जाने पर और यौवन (जवानी) के क्रमशः गत होजाने पर बुद्धिमानों के लिये केवल यही उचित है कि वे कहीं गङ्गा जी के जल से पवित्र हो (धुल) रहे हैं पत्थर जिनके ऐसे हिमालय की कन्दरा मय कुञ्ज में निवास करें।

अद्यापि नोज्झति हरः किल कालकूटं,
कूर्मो विभर्ति धरणीं खलु पृष्ठभागे।
अम्भोनिधिर्वहति दुःसहवाडवाग्निम्,
अङ्गीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति ॥२०८॥

आज तक भगवान् शंकर कालकूट विष का परित्याग नहीं करते और कूर्मस्वरूप भगवान् विष्णु अपनी पीठ पर पृथ्वी धारण ही किये हैं, समुद्र भी असह्य वडवानल को धारण ही किये है। वस्तुतः सज्जन लोग अङ्गीकार किये हुये वचन व कार्य का सदा पालन ही करते हैं।

लोभश्चेदगुणेन किं पिशुनता यद्यस्ति किं पातकैः
सत्यं चेत्तपसा च किं शुचि मनो यद्यस्ति तीर्थेन किम्।
सौजन्यं यदि किं गुणैः सुमहिमा यद्यस्ति किं मण्डनैः
सद्विद्या यदि किं धनैरपयशो यद्यस्ति किं मृत्युना ॥२०९॥

यदि लोभ है तो और दुर्गुणों से क्या ? पैशुन्य (चुगलखोरी) है तो अन्य पापों से क्या ? सत्य भाषण है तो तप करने से क्या ?

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मन पवित्र है तो तीर्थ करने से क्या ? सज्जनता है तो अन्य गुणों से क्या ? अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त है तो भूषण धारण करने से क्या ? श्रेष्ठ विद्या पास में है तो धन से क्या ? और यदि अपयश हो गया है तो मृत्यु से क्या ? क्योंकि वह मृत्यु से बढ़कर है ।

कः शूरो विजितेन्द्रियः प्रियतमा कानुव्रता किं धनं
विद्या किं सुखमप्रवासपरता किं राज्यमाज्ञाफलम् ।
को लाभो गुणिसङ्गमः किमसुखं प्राज्ञेतरोपाश्रयः
का हानिर्विनयच्युतिर्निपुणता का धर्मतत्वे रतिः ॥२१०॥

शूर वही है जो जितेन्द्रिय है, प्रियतमा वही है जो अनुगामिनी है, विद्या ही धन है, विदेश में निरन्तर न रहना ही सुख है, आज्ञा का पालन होना ही राज्य है, गुणियों का सङ्गम लाभ है, मूर्ख (ना समझ) के आश्रित रहना ही दुःख है, नम्रतारहित होना ही हानि है और धर्म में अनुराग रखना ही चतुरता है ।

पापान्निवारयति योजयते हिताय
गुह्यं च गूहति गुणान् प्रकटीकरोति ।
आपद्गतं च न जहाति ददाति वित्तं
सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः ॥२११॥

सच्चा मित्र पापकर्म से हटाता है, हितकर्म में लगाता है, रहस्य को बताता है, गुणों को प्रकट करता है, आपत्ति आ पड़ने पर

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

त्यागता नहीं और धन को देता है, सज्जनों ने इसे ही श्रेष्ठ मित्र का लक्षण कहा है ।

तया कवितया किंवा, किंवा वनितया तया ।
पदविन्यासमात्रेण यया नापहृतं मनः ॥२१२॥

उस कविता और उस वनिता (स्त्री) से क्या फल ? जिसने पद-विन्यास (पद-योजना व पैर रखने) मात्र से ही मन न हर लिया । अर्थात् जिस कविता की पदयोजना मनोहर नहीं है और जिस रमणी का पाद-विक्षेप मुग्धकर नहीं है उसका होना ही व्यर्थ है ।

साहित्यसङ्गीतकलाविहीनः
साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः ।
तृणन्न खादन्नपि जीवमानः
तद्भागधेयं परमं पशूनाम् ॥२१३॥

साहित्य और सङ्गीत-विद्या से रहित पुरुष, बिना पूंछ सींग के पशु है । वह तृण न खाता हुआ जो जीवन बिताता है सो मानो पशुवों का परम सौभाग्य है ।

लालयेत्पञ्च वर्षाणि दश वर्षाणि ताड़येत् ।
प्राप्ते तु षोडशे वर्षे पुत्रं मित्रवदाचरेत् ॥२१४॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पाँच वर्ष की अवस्था तक पुत्र का लालन (दुलार) करे और उसके अनन्तर १० वर्ष अर्थात् १५ वर्ष की अवस्था तक ताड़न करता हुआ शिक्षा देवे। परन्तु जब वह १६ वें वर्ष की अवस्था में पहुँचे तब से मित्र के समान उसके साथ व्यवहार करे।

लालनाद्बहवो दोषास्ताडनाद्बहवो गुणाः।
तस्माच्छिष्यं च पुत्रं च ताडयेन्न तु लालयेत् ॥२१५॥

लालन (दुलार) करने में बहुत से दोष हैं और ताड़न (डाट-डपट) करने में बहुत से गुण हैं। अतः शिष्य और पुत्र का ताड़न ही करना चाहिये न कि लालन।

चिता चिन्ता द्वयोर्मध्ये चिन्ता ह्येव गरीयसी।
चिता दहति निर्जीवं चिन्ता चैव सजीवकम् ॥२१६॥

चिता और चिन्ता इन दोनों के बीच चिन्ता ही बढ़कर है। चिता तो निर्जीव को जलाती है किन्तु चिन्ता सजीव को भी जला देती है।

गात्रं संकुलितं गतिर्विगलिता भ्रष्टा च दन्तावलि-
र्दृष्टिर्भ्रश्यति रूपमेव हरते वक्त्रं च लालायते।
वाक्यं नैव करोति बान्धवजनः पत्नी शुश्रूषते
हा कष्टं जरयाभिभूतपुरुषं पुत्रोप्यवज्ञायते ॥२१७॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शरीर शिथिल होगया है, चलने की शक्ति क्षीण होगई है, दाँत सब गिर गये हैं, नेत्र की ज्योति हीन होगई है, रूप नष्ट हो गया है, मुख से राल टपक रही है, पारिवारिक जन बात नहीं करते, पत्नी सेवा नहीं करती और बड़े दुःख की बात है कि पुत्र भी जराक्रान्त वृद्ध पुरुष का अनादर करता है।

शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुं
न चेदेवं देवो न खलु कुशलः स्पन्दितुमपि।
अतस्त्वामाराध्यां हरिहरविरिञ्च्यादिभिरपि
प्रणन्तुं स्तोतुं वा कथमकृतपुण्यः प्रभवति ॥ २१८

शिव जी जब शक्ति से युक्त होते हैं तभी संहार करने में समर्थ होते हैं। विना शक्ति के कुछ हिला तक नहीं सकते। इस लिये ब्रह्मा विष्णु और महेश की भी आराध्य हे देवि! जिसने पुण्यनहीं किया है ऐसा पुरुष तुम्हें प्रणाम करने अथवा स्तुति करने के लिये कैसे समर्थ हो सकता है?

पुराणमित्येव न साधु सर्वं
न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।
सन्तः परीक्ष्यान्यतरद्भजन्ते
मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः ॥२१९॥

यह बात पुरानी है अतएव सब ठीक है और यह बात नई है अतएव निन्द्य है, ऐसा नहीं कहा जा सकता। वस्तुतः सज्जन लोग

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

परीक्षा करके ही जो दोनों में ठीक होता है उसी को मानते हैं। किन्तु मूर्ख तो दूसरे ही के विश्वास पर चलता है।

शास्त्राण्यधीत्यापि भवन्ति मूर्खा
यस्तु क्रियावान्पुरुषः स विद्वान् ।
सुचिन्तितं चौषधमातुराणां
न नाममात्रेण करोत्यरोगम् ॥२२०॥

शास्त्र पढ़ करके भी मूर्ख होते हैं किन्तु जो पुरुष उसके अनुसार आचरण करता है वस्तुतः वही विद्वान् है। रोगियों के लिये भली भाँति सोचकर निश्चित की गई हुई औषध केवल नाम उच्चारण करने मात्र से (विना खिलाये) नीरोग नहीं कर सकती।

मृगमीनसज्जनानां तृणजलसन्तोषवृत्तीनाम् ।
लुब्धकधीवरपिशुना अकारणं वैरिणो जगति ॥२२१॥

तृण वृत्ति वाले मृग, जल वृत्ति वाले मीन (मछली) और सन्तोष वृत्ति वाले सज्जनों के भी इस संसार में शिकारी, मछुवा और चुगलखोर बिना कारण के ही बैरी रहते हैं।

यदीच्छेत्परमां प्रीतिं त्रीणि तत्र न कारयेत् ।
वाग्वादमर्थसम्बन्धं परोक्षे दारभाषणम् ॥२२२॥

यदि किसी से सदा प्रीति स्थिर रखना चाहे तो तीन कर्म कदापि न करे (१) बकवाद (२) रुपये का लेन देन और (३) परोक्ष में उसके घर की स्त्री के साथ बात चीत।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अधमा धनमिच्छन्ति धनं मानं च मध्यमाः ।
उत्तमा मानमिच्छन्ति मानो हि महतां धनम् ॥ २२३

अधम पुरुष धन ही चाहते हैं, मध्यम पुरुष धन और मान दोनों चाहते हैं और उत्तम पुरुष मान ही चाहते हैं। वस्तुतः मान ही महापुरुषों के लियें परम धन है।

रत्नैर्महार्हैस्तुतुषुर्न देवा
न भेजिरे भीमविषेण भीतिम् ।
सुधां विना न प्रययुर्विरामं
न निश्चितार्थाद्विरमन्ति धीराः ॥२२४॥

समुद्र मन्थन करते समय बहु मूल्य रत्नों से देव लोग सन्तुष्ट न हुये और न भयङ्कर विष से डरे ही, किन्तु जब तक अमृत प्राप्त नहीं कर लिया तब तक हटे नहीं। वस्तुतः धीर लोग अपने निश्चित अर्थ को बिना प्राप्त किये उद्योग करना नहीं छोड़ते।

आशाया ये दासास्ते दासाः सर्वलोकस्य ।
येषामाशा दासी तेषां दासायते लोकः ॥२२५॥

जो लोग आशा के दास हैं, उन्हें सब लोगों का दास बनना पड़ता है। और आशा जिनकी दासी है, उनके सब लोग दास होजाते हैं।

नदीनां शस्त्रपाणीनां नखिनां शृङ्गिणां तथा ।
विश्वासो नैव कर्तव्यः स्त्रीषु राजकुलेषु च ॥२२६॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नदियों का, हथियार वालों का, नख से प्रहार करने वाले जानवरों का, सींगवाले जीवों का, स्त्रियों का और राज-पुरुषों का विश्वास नहीं करना चाहिये।

अजरामरवत्प्राज्ञो विद्यामर्थञ्च चिन्तयेत् ।
गृहीत इव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत् ॥२२७॥

अपने को अजर (कभी न बृद्ध होने वाला) और अमर (कभी न मरने वाला) समझ कर बुद्धिमान् पुरुष विद्या और धन का उपार्जन करे। किन्तु मृत्यु ने चोटी पकड़ लिया है ऐसा समझता हुआ धर्म का आचरण करे।

सौजन्यधन्यजनुषः पुरुषाः परेषां
दोषान् विहाय गुणमेव गवेषयन्ति ।
त्यक्त्वा भुजङ्गमविषं हि पटीरगर्भात्
सौगन्ध्यमेव पवनाः परिवाहयन्ति ॥२२८॥

सज्जनता पूर्ण होने से धन्य है जन्म जिनका ऐसे पुरुष दूसरों के दोषों को छोड़ कर गुण को ही खोजा करते हैं। वायु, चन्दन बृक्ष से साँपों के विष को छोड़कर उसकी सुगन्धि को ही ग्रहण करता है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

रे रे चातक ! सावधानमनसा मित्र क्षणं श्रूयताम्
अम्भोदा बहवो हि सन्ति गगने सर्वेऽपि नैतादृशाः ।
केचिद्वृष्टिभिरार्द्रयन्ति वसुधां गर्जन्ति केचिद्वृथा
यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः ॥

ऐ मित्र चातक ! (पपीहा) जरा सावधान चित्त होकर सुनो– आकाश में बादल बहुत से हैं किन्तु सब ऐसे नहीं हैं कि जल बरसें । उनमें कोई तो बरस करके पृथ्वी को तर कर देते हैं और कोई व्यर्थ गरजते ही हैं बरसते नहीं । अतः जिस जिस (बादल) को देखो उस उस के आगे दीन वचन कभी न बोलो ।

सर्वस्य द्वे सुमतिकुमती सम्पदापत्तिहेतू
वृद्धो यूना सह परिचयात् त्यज्यते कामिनीभिः ।
एको गोत्रे स भवति पुमान् यः कुटुम्बं बिभर्ति
स्त्री पुंवच्च प्रभवति यदा तद्धि गेहं विनष्टम् ॥

सुमति ही सबके लिये सम्पत्ति और कुमति ही सबके लिये आपत्ति का कारण है, स्त्रियाँ युवक के साथ परिचय हो जाने से वृद्ध को त्याग देती हैं । कुल में एक ही पुरुष होता है जो कि कुटुम्ब का पालन करता है । स्त्री जब पुरुष के समान आचरण करने लगती है तब वह घर नष्ट हो जाता है ।

व्यवस्थितः प्रशान्तात्मा कुपितोप्यभयङ्करः ।
अव्यवस्थितचित्तस्य प्रसादोऽपि भयङ्करः ॥२३१॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

व्यवस्थित और शान्त चित्त वाला पुरुष क्रुद्ध होने पर भी भय नहीं पैदा करता। किन्तु अव्यवस्थित चित्त वाले की प्रसन्नता भी भयङ्कर ही होती है।

अत्यन्तमतिमेधावी त्रयाणामेकमश्नुते।
अल्पायुषो दरिद्रो वा ह्यनपत्यो न संशयः ॥२३२॥

अत्यन्त बुद्धि वाला मेधावी पुरुष अल्पायु या दरिद्र अथवा निःसन्तान (इन तीनों में एक अवश्य) होता है।

यस्य किञ्चिन्न दातव्यं तस्य देयं किमुत्तरम् ?
अद्य सायं पुनः प्रातः सायम्प्रातः पुनः पुनः ॥२३३॥

जिसको कुछ नहीं देना है उसे उत्तर क्या दे ? (कुछ भी नहीं) आज सायंकाल, कल प्रातःकाल इस प्रकार बार बार सायं प्रातः वादा करता हुआ टरका देवे।

अङ्गं गलितं पलितं मुण्डं दशनविहीनं जातं तुण्डम्।
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं तदपि न मुञ्चत्याशा पिण्डम् ॥

शरीर जीर्ण शीर्ण होगया है; शिर के बाल सब श्वेत हो गये हैं, मुँह भी दाँतों से रहित होगया है और वृद्ध इतना होगया है कि दण्ड के सहारे ही चल सकता है, तौ भी आशा पिण्ड को नहीं छोड़ती।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सस्यानि स्वयमत्ति चेद्वसुमती माता सुखं हन्ति चे-
द्वेलामम्बुनिधिर्विलङ्घयति चेद्भूमिं दहेत्पावकः ।
आकाशं जनमस्तके पततिं चेदन्नं विषं चेद्भवेत्
अन्यायंकुरुते यदा क्षितिपतिः कस्तं निरोद्धुं क्षमः॥२३५॥

यदि स्वयं पृथ्वी अन्न को खाने लगे, माता पुत्र-सुख को नष्ट करने लगे, समुद्र अपनी सीमा को उल्लङ्घित करने लगे, अग्नि पृथ्वी को भस्म करने लगे, आकाश लोगों के मस्तक पर गिरने लगे, अन्न ही विष होने लगे, और पृथ्वी का पालन करने वाला अर्थात्-राजा स्वयम् अन्याय करने लगे, तो उसे कौन रोक सकता है ?

अबला यत्र प्रबला बालो राजा निरक्षरो मन्त्री ।
नहि नहि तत्र धनाशा जीवित आशापि दुर्लभा भवति॥

स्त्रियों का ही जहाँ प्रभाव है, बालक जहाँ राजा है और मन्त्री जहाँ मूर्ख है, वहाँ धन की आशा कदापि नहीं करनी चाहिये, बल्कि जीने की आशा भी दुर्लभ हो जाती है।

न स्वल्पमप्यध्यवसायभीरोः
करोति विज्ञाननिधिर्गुणं हि ।
अन्धस्य किं हस्ततलस्थितोऽपि
प्रकाशयत्यर्थमिह प्रदीपः ॥२३७॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उद्योग से डरने वाले पुरुष की ज्ञान-राशि उसको तनिक भी लाभ नहीं पहुँचा सकती । अन्धे की हथेली पर भी रक्खा हुआ दीपक क्या उसे वस्तुओं को दिखा सकता है ?

अक्षराणि परीक्ष्यन्तामम्बराडम्बरेण किम् ।
शम्भुरम्बरहीनोऽपि सर्वज्ञः किं न जायते ॥२३८॥

विद्वत्ता को देखना चाहिये, वस्त्र के आडम्बर से क्या ? शिवजी वस्त्र रहित (नग्न) होने पर भी क्या सर्वज्ञ नहीं कहलाते ?

किं वाससैवं न विचारणीयं
वासः प्रधानं खलु योग्यतायाः ।
पीताम्बरं वीक्ष्य ददौ तनूजां
दिगम्बरं वीक्ष्य विषं समुद्रः ॥२३९॥

वस्त्र से क्या ? ऐसा कभी न सोचना चाहिये, योग्यता प्रकाशित करने के लिये वस्त्र ही प्रधान उपाय है । समुद्र ने पीताम्बर (पीत वस्त्र) देखकर ही विष्णु को अपनी लड़की (लक्ष्मी) दिया और नग्न देखकर ही शिवजी को विष दिया ।

धनधान्यप्रयोगेषु विद्यासंग्रहणेषु च ।
आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत् ॥२४०॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

धन, अन्न के लेन देन में, विद्योपार्जन करने में, भोजन करने में और पारस्परिक व्यवहार में जो लज्जा को त्याग देता है वही सुखी रहता है।

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम् ।
आयू रक्षति मर्माणि आयुरन्नं प्रयच्छति ॥२४१॥

अर्जुन की दो प्रतिज्ञायें थीं, न दीनता दिखाना और न युद्ध से भागना, क्योंकि आयु (यदि अवशिष्ट है तो वह) मर्मों (शरीर के अङ्गों) की रक्षा करती है और जीवन के लिये वही अन्न भी देती है ।

उद्धरेदात्मनाऽऽत्मानं नात्मानमवसादयेत् ।
आत्मैवाह्याऽऽत्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ॥२४२॥

अपने ही से अपना उद्धार करना चाहिये, कभी भी अपने को ग्लान न करना चाहिये, क्योंकि मनुष्य स्वयं ही अपना बन्धु (सहायक) है और स्वयं ही अपना शत्रु है ।

इदमेव हि पाण्डित्यं चातुर्यमिदमेव हि ।
इदमेव सुबुद्धित्वमायादल्पतरो व्ययः ॥२४३॥

यही विद्वत्ता, यही चतुरता, और यही बुद्धिमत्ता है कि मनुष्य अपनी आय (आमदनी) से व्यय (खर्च) बहुत कम करे।

उद्यमः कलहः कण्डूर्द्यूतं मद्यं परस्त्रियः ।
आहारो मैथुनं निद्रा सेवनात्तु विवर्धते ॥२४४॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

व्यापार, कलह, खुजली, जुवा, मद्य, परस्त्री-गमन, भोजन, मैथुन और निद्रा (सोना) सेवन करने से प्रतिदिन बढ़ती ही जाती है।

देशाटनं पण्डितमित्रता च
वाराङ्गना राजसभाप्रवेशः।
अनेकशास्त्राणि विलोकितानि
चातुर्यमूलानि भवन्ति पञ्च ॥२४५॥

देशों का परिभ्रमण, पण्डितों के साथ मित्रता, वेश्या संग, राजसभा में बैठना और अनेक शास्त्रों का अनुशीलन करना ये पाँच चतुर होने के प्रधान कारण हैं।

सिद्धमन्नं फलं पक्वं नारीप्रथमयौवनम्।
सुभाषितं च ताम्बूलं सद्यो गृह्णाति बुद्धिमान् ॥२४६॥

सिद्ध (पका हुआ) भोजन, पका फल, स्त्री का प्रथम यौवन, सुभाषित और ताम्बूल को बुद्धिमान् पुरुष तुरन्त ही ग्रहण करता है।

उपाध्यायश्च वैद्यश्च ऋतुकाले वराङ्गना।
सूतिका दूतिका चैव कार्यान्ते तृणवत्स्मृताः ॥२४७॥

अध्यापक, वैद्य, ऋतुकाल में स्त्री, प्रसूता और दूती (कुटनी) ये कार्य समाप्त हो जाने पर तृणवत् माने जाते हैं।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शक्यो वारयितुं जलेन हुतभुक् छत्रेण सूर्यातपो
नागेन्द्रो निशितांकुशेन समदो दण्डेन गोगर्दभौ ।
व्याधिर्भेषजसंग्रहैश्च विविधैर्मन्त्रप्रयोगैर्विषं
सर्वस्यौषधमस्ति शास्त्रविहितं मूर्खस्य नास्त्यौषधम् ॥

जल से अग्नि की ज्वाला, छत्र से धूप, तीक्ष्ण अंकुश से मतवाला हाथी, डंडे से बैल और गधा, औषधियों से रोग और अनेक प्रकार के मन्त्रों के प्रयोग से विष हटाये जा सकते हैं। वस्तुतः सब की औषधि (उपाय) शास्त्र में कही है किन्तु मूर्ख का कोई भी इलाज नहीं है।

मूर्खत्वं हि सखे ! ममापि रुचिरं तस्मिन् यदष्टौ गुणाः
निश्चिन्तो बहुभोजनेष्वभिरुची रात्रौ दिवा सुप्यते ।
कार्याकार्यविचारणान्धबधिरो मानापमानौ समौ
कृत्वा सर्वजनस्य मूर्धनि पदं मूर्खः सुखं जीवति ॥२४९॥

ऐ मित्र मूर्खता मुझे भी अच्छी लगती है क्योंकि उसमें आठ गुण हैं—निश्चिन्त रहना, बहुत खाने में रुचि, रात दिन खूब सोना, कर्तव्य अकर्तव्य के विचार को न देखना न सुनना, मान और अपमान को समान ही मानना। एवं सब लोगों के मस्तक पर पैर रख कर (सर्वोपरि होकर) मूर्ख सुखपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करता है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मौखर्यं लाघवकरं मौनमुन्नतिकारकम् ।
मुखरं नूपुरं पादे कण्ठे हारो विराजते ॥२५०॥

बहुत बोलना लाघव पैदा करता है और मौन रहना उन्नत करता है। इसी हेतु नूपुर पैर में बाँधा जाता है और हार गले में सुशोभित होता है।

गुणिनोऽपि सन्ति बहवो गुणवेत्तारः सुदुर्लभा जगति ।
हिमकरकररसरसने रसनाचतुराश्चकोरका एव ॥२५१॥

संसार में गुणी बहुत हैं परन्तु गुण की कद्र करने वाले ही कम (दुर्लभ) हैं। चन्द्रमा की किरणों के रसास्वादन करने में चतुर है रसना जिनकी ऐसे तो चकोर ही हैं।

❀ समाप्त। ❀

है प्रतापकण्ठाभरण, सूक्तिपुञ्ज निरवद्य ।
सुनि गुनि सज्जन सुख लहहिं, पढ़ि पुनि एकहु पद्य ॥

हिन्दी-भाषा-भाषि-हित, भाषा-टीका कीन ।
श्री राजेश्वरदत्त इत, छमहिं दोष परवीन ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हर्ष का परिणाम विषाद है।

(भारतमञ्जरी)

लक्ष्मीश्चामरतारचारुहसिता मत्तेभकुम्भस्तनी
त्रैलोक्याक्रमणः पराक्रमभरः सम्भोगयोग्यं वयः।
एवं सर्वभरवर्वगर्वसुखदं संचर्व्यमाणं पुनः
पर्यन्ते परिणाममीलदखिलास्वादं विषादास्पदम् ॥

—क्षेमेन्द्र ।

चँवर के समान स्वच्छ सुन्दर मुसक्यान वाली और मस्त हाथी के मस्तक पिंड जैसे स्तन वाली लक्ष्मी जिनके घर में, त्रिलोकी को भी दबा देने वाला जिनका पराक्रम, सदा सम्भोगयोग्य (षोडश वर्षीय) जिनकी अवस्था ऐसा बड़े गर्व सुख को देने वाला कृष्ण का जीवन अन्त में—परिणाम द्वारा समस्त आनन्द विहीन होकर विषादास्पद होगया।

तत्वार्थ—किसी दिन हर्ष का अन्त होकर अन्त में विषाद ही रह जाता है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विचार से शान्ति मिलती है।

(भारतमञ्जरी)

रत्नोदारचतुस्समुद्ररसनां भुक्त्वा भुवं कौरवो
भग्नोरुः पतितः स निष्परिजनो जीवन्वृकैर्भक्षितः।
गोपैर्विश्वजयी जितः स विजयः कक्षैः क्षिता वृष्णयः
तस्मात्सर्वमिदं विचार्य सुधिया शान्त्यै मनो दीयताम्॥

—क्षेमेन्द्र।

रत्नों से भरे चारों समुद्रों की खाई से सुरक्षित समस्त पृथिवी को भोगकर युद्ध में जाँघ टूटने पर सेवक और अपने कुटुम्बियों से रहित पड़ा हुआ कौरव (दुर्योधन) जीते जी भेड़ियों से खाया गया, विश्व-विजयी विजय (अर्जुन) साधारण गोपों से जीता गया, असंख्य परिमाण वाले वृष्णि (यादव) साधारण तृण से कट मरे, इन सब बातों को विचार कर चित्त को शान्ति में ही लगाना चाहिये।

तत्वार्थ—किसी का भी वैभव सदा स्थायी नहीं रहता।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi